तिमिरनाशक ग्रन्थावली

का

प्रथम खण्ड

क़ुरान-भाष्य ।

सम्पादक

धर्म्मवीर 'आर्य्य मुसाफ़िर'

आगरा ।

॥ ओ३म् ॥

क़ुरान-भाष्य !

प्रथम खण्ड !

भाष्यकर्त्ता —

धर्म्मवीर 'आर्य्य मुसाफ़िर'

अर्बी अध्यापक—'मुसाफ़िर विद्यालय'

आगरा ।

निन्दन्तु नीति निपुणा, यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
सत्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न वीराः ॥

आर्य्याब्द १९७२९४९०१८

कुंवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी के प्रबन्ध से

राजपूत ऐंग्लो-ओरियण्टल प्रेस, आगरा में मुद्रित ।

प्रथमावृत्ति १०००]

[मूल्य ।=)

सङ्केत ।

पाठकों को अर्बी-आयत पढ़ने के पूर्व निम्नलिखित सङ्केतों का अवश्य ध्यान रहना चाहिये अन्यथा शुद्ध उच्चारण न हो सकेगा । नीचे दिये हुए नक़शे से ज्ञात हो जायगा कि जो अर्बी हर्फ़ात और अल्फ़ाज़ हिन्दी में नहीं आते हैं उन के स्थान में हिन्दी के किन २ अक्षरों को प्रयोग में लाया गया है ।

हिन्दी		अर्बी		विशेष सूचना
नाम सङ्केत	उदाहरण	नाम सङ्केत	उदाहरण	
स्वररहित व्यञ्जन	क्	ساكن	جزم	इस को संस्कृत में हल् कहते हैं । यह स्वयं नहीं बोला जाता प्रत्युत पिछले अक्षरों के साथ मिल कर आवाज़ देता है यथा इ + ल् + ला = इल्ला
अ	क + अ	زبر	ک	यह व्यञ्जन के साथ मिलकर आ की दबी हुई आवाज़ देगा
ए	नार + ए	زير	زار	यह व्यञ्जन के साथ मिलकर अर्द्ध य की आवाज़ देगा।
अ़	शु + फ़अ़	ع	شفع	यह भी स्मरण रहे कि ز—ذ ظ--ض का ज़ से غ का ग़ ف का फ़ से और ق का क़ से उच्चारण लिखा गया है

नोट—समस्त क़ुरान में ३० सिपारे, ११४ सूरतें, ५५८ रुकुअ़ ६२३७ आयतें ७७६३३ कल्मात १०२७००० हुरुफ़ और ७ मंज़िलें हैं ।

वक्तव्य ।

मैं इस समय कोई लम्बी चौड़ी भूमिका लिखने के लिये उद्यत नहीं हूं। प्रत्युत मेरा विचार है कि जब पाठकों के हाथ में पूर्ण भाष्य पहुंच जाय तब कुरान के सम्बन्ध में एक अन्वेषणापूर्ण और विस्तृत लेख लिखूंगा क्योंकि कुरान से विज्ञता प्राप्त हो जाने पर ही पाठकों को उसके पढ़ने में कुछ आनन्द आ सकेगा। वास्तवमें तो इस भाष्य की भूमिका वही होगी किन्तु यहां यह बतला देना आवश्यक समझता हूं कि मुझे यह भाष्य करने की आवश्यकता क्यों पड़ी? इस का संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि जिस समय मैं कुरान, बाइबिल का पूर्णतया अन्वेषण कर चुका तो उनके सम्बन्ध में अपने अन्तिम निश्चय की सूचना मुसल्मान, तथा ईसाईयों को चैलेञ्ज के रूप में देकर सत्यासत्य के निर्णय के लिये आह्वान किया किन्तु कुछ समय तक प्रतीक्षा करने पर भी जब कोई मौलवी और पादरी शास्त्रार्थ के लिये उद्यत न हुआ तो मैं ने उचित समझा कि नगर २ घूम कर लेक्चरों द्वारा ही अपना सन्देसा जनता को सुनाऊं। बहुधा उस समय मुझ से मिलने

वाले महाशय यही कहते थे कि 'कुरान' का हिन्दी अनुवाद अवश्य हो जाना चाहिये, इसके पढ़ने की लोगों को बहुत उत्कंठा है, यद्यपि इसका नोटिस तो कुछ लोगों ने कई बार दिया है किन्तु कोई इस कार्य को संपूर्ण नहीं कर सका। हां केवल उर्दू का उल्था करके कई आदमियों ने कुछ टके ज़रूर बटोर लिये हैं। मैंने उस समय तो इसका यही उत्तर दिया कि अवकाश मिलने पर देखा जायगा, इस समय तो मौखिक प्रचारमें संलग्न हूं। मेरा स्वप्न में भी ऐसा विचार न था कि मैं इतना शीघ्र अपने शुभचिन्तकों की आज्ञा का पालन कर सकूंगा। किन्तु दैव इच्छा बलवती है। अन्ततः समय आया कि विवशता से मुझे कुछ समयके लिये मुसाफ़िर विद्यालय में अर्बी की अध्यापकता का कार्य अपने हाथ में लेना पड़ा। इसमे कुछ अवकाश मिलने पर मेरा ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और मैं विचार-सागर में निमग्न हो सोचने लगा कि अहो! कितने अन्याय की बात है कि जिस पुस्तक को ख़ुदा की ओर से बतलाया जाता है उससे २२ कोटि के लगभग हिन्दू, जो कि अर्बी नहीं जानते, सर्वथा अनभिज्ञ हैं। क्या इनका अधिकार नहीं है कि वे भी ख़ुदाई पुस्तक से मनो वाञ्छित लाभ उठा सकें? शोक है कि इस्लाम को विश्वव्यापी करने वाले मौलवियों ने आधुनिक समय तक इस ओर कुछ भी

ध्यान नहीं दिया। इसके साथ ही ईसाईयों की उदारता और पुरुषार्थ का चित्र सामने आते हुए मुझे अपने एक मित्र की वह बात याद आ गई जोकि उन्होंने एक समय पूर्वीय यात्रा करते हुए मुझ से कही थी कि देखो! 'ईसाईयों का पुरुषार्थ कितना सराहनीय है कि बाइबिल का लगभग ५७० भाषाओं में अनुवाद होते हुए भी एक ईसाई पादरी मुझ से कह रहे हैं कि यदि तुम बुन्देलखण्डी भाषा में बाइबिल का अनुवाद कर दो तो मैं तुम्हारा बहुत कुछ प्रत्युपकार करने को उद्यत हूं। चूंकि मेरे दिल में आर्य्य शहीद पं० लेखराम का अनुयायी होने से अपने मुसलमान भाइयों के लिये विशेष स्थान है अतः मैं विवश हुआ कि हिन्दी विज्ञ लोगों पर कुरान-रहस्य प्रकट करने के लिये मैं ही साधन बनूं अब मैं ने लेखनी उठा कर भाष्य प्रारम्भ कर दिया। निदान यह उसीका प्रथम खण्ड आपके कर-कमलों में उपस्थित है। यह अच्छा है या बुरा, यह निश्चय करना तो आपका काम है, किन्तु हां, मैंने स्वशक्त्यनुसार इस के उपयोगी बनाने में अपनी ओर से कुछ कसर बाकी नहीं रक्खी। काग़ज़ के अधिक मंहगे होने पर भी २५ पाउण्ड का बढ़िया काग़ज़ लगाया गया है। अन्वेषण के सम्बन्ध में तो मुझे केवल इतना कहना ही पर्य्याप्त है कि यह कुरान-भाष्य इस्लामी ग्रन्थों का

निचोड़ है। विषय पुष्टि के लिये इसमें बहुत सी ऐसी पुरानी पुस्तकों से लेख उद्धृत किये गये हैं जो कि आज कल मुश्किल से मिलती हैं और जिनके नाम बहुत से मुसल्मान भी नहीं जानते प्रायः लेखक ऐसा लिख दिया करते हैं कि अमुक पुस्तक में ऐसा लिखा है जिस से यह बड़ी हानि हुआ करती है कि आवश्यकता पड़ने पर पुस्तक पास होते हुए भी वह उस से यथोचित लाभ नहीं उठा सकते किन्तु मैं ने ऐसा नहीं किया प्रत्युत पृष्ठ संख्या, छपने का सन् और स्थान तथा प्रेस का नाम भी दे दिया है। कहीं२ आवश्यक ज्ञान पड़ने पर पंक्तियों का नम्बर भी दिया गया है। इन सब बातोंको देखते हुए निस्सन्देह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक न केवल हिन्दी वालों के लिये ही बल्कि उर्दू, फ़ारसी, अंगरेज़ी जानने वालों के लिये भी बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी। हां छपाई के सम्बन्ध में मुझे कुछ कहना है वह यह कि यथातथ्य भाव लाने के लिये उर्दू, अर्बी, फ़ार्सी शब्दों का प्रयोग अधिक करना पड़ा है अतः कई २ बार के प्रूफ़ संशोधन पर भी इस में कहीं २ व्याख्यादि में अशुद्धियां रह गई हैं। अगले खण्डों में इसका विशेष ध्यान रक्खा जायगा। समय अधिक न मिलने और प्रेस से २-२॥ मील के फ़ासले पर रहने के कारण श्री कुंवर हनुमन्त सिंह जी रघुवंशी ने मुझे प्रूफ़ संशोधन में अधिक सहायता दी है इसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूं। मेरा जो औचित्य था मैं उसे पूरा कर चुका। अब इस को अपनाना या न अपनाना आपका कर्तव्य है।

धर्मवीर।

॥ ओ३म् ॥

क़ुरान-भाष्य ।

सूरते फातेहः, मक्की*, रुकुअ १ आयत ७ कल्मात २५ हुरूफ १३३

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम् (१)

अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल् आलमीन (२) र्रहमानिर्रहीम् (३) मालिके यो मद्दीन् (४) इय्याक नअ़बुदो व इय्याक नस्तअ़ईन् (५) इहदेनस्सिरा तल्मुस्तक़ीम् (६) सिरातल्लज़ीन अन्अ़म्त अ़लय् हिम् ग़य् रिल्मग़ ज़ूबे अ़लय् हिम् व लज़्ज़ा- ल्लीन् (७)

भाषा टीका—१ आरम्भ अल्लाह के नाम से जो कृपालु, दयालु है। २ सब स्तुति अल्लाह के लिये है जो संसार का परिपालक। ३ (तथा) कृपालु, दयालु, ४ न्याय के दिन का अधिपति है। ५ हम तेरी ही वन्दना करते हैं और तुझ ही से सहायता चाहते हैं। ६ हमें सुमार्ग दर्शा। ७ (अर्थात्) उन का पथ जिन पर तू

---

* टिप्पणी १ जो सूरतें मक्के शरीफ़ में नाज़िल हुई हैं उन को मक्की, और जो मदीने में नाज़िल हुईं उन को मदनी कहते हैं।

ने अनुग्रह किया न कि उन का जिन पर तू क्रुद्ध हुआ और न मार्गभ्रष्टों का ॥

व्याख्या—चूंकि इस सूरत से क़ुरान पढ़ना या लिखना आरम्भ होता है इसीलिये इस का नाम 'फ़ातेह तुल्किताब' है अधिक प्रयोग होने से केवल फ़ातेहः ही कहने लगे हैं, इस में अल्लाह ने उपदेश दिया है कि मेरी स्तुति इस प्रकार होनी चाहिये अतएव यह सूरत नमाज़ में कई बार पढ़ी जाती है इस में बहुत सी ऐसी विशेषताएं हैं जो और सूरतों में नहीं मिलती, कहा जाता है कि सृष्टि के आरम्भ से अद्य पर्यन्त १०४ आस्मानी पुस्तकें पृथ्वी पर उतरी हैं अर्थात् हज़रत आदम पर १० ह० शेस पर ५० ह० इदरीस पर ३० ह० इब्राहीम पर १० ह० मूसा पर १ ह० दाऊद पर १ ह० ईसा पर १ ह० मुहम्मद पर १, इन सब पुस्तकों का जीवन केवल क़ुरान में और सारे क़ुरान का इस सूरत में और इस का भी इस की पहली आयत 'बिस्मिल्लाह' में और उस का भी उस के प्रथम शब्द 'बे' में विद्यमान है इसीलिये इस का नाम 'उम्मुल्क़ुरान' अर्थात् क़ुरान की माँ भी है, इसका एक शब्द पढ़ने पर बहुत सी नेकियां लिखी जाती हैं, इस की प्रथम आयत में १९ हुरूफ़ हैं जो इन्हें पढ़ेगा वे 'दोज़ख़' के १९ फ़रिश्तों से उस की

रक्षा करेंगे, मनोरथ सिद्धि के लिये इस आयत को काग़ज़ पर लिख कर जो बहते पानी में छोड़ दे उसे सफलता प्राप्त होजाती है, यह हलाहल विष के लिये भी अपूर्व औषधि है, कहते हैं कि जब 'ख़ालिद् बिन वलेद्' से क़ाफ़िरों ने इस्लाम के सत्य होने का प्रमाण मांगा तो वह हलाहल विष का भरा प्याला इसी आयत को कह कर पी गये, और उन पर कुछ भी विष का प्रभाव न पड़ा। यदि इस सूरत को सांप अथवा बिच्छू के काटे हुए पर फूंक दें तो भी आरोग्यता प्राप्त होगी, इसके अतिरिक्त यह और भी रोगों के लिये प्रयोग में लाई जा सकती है क्योंकि हज़रत मुहम्मद ने फ़रमाया है कि "फ़ातेहुल्किताबो शिफ़ाऊन् मिन् कुल्ले दाइन्", अर्थात् सूरते फ़ातेहः प्रत्येक रोग के लिये आरोग्यता प्रदान करने वाली है (पूर्वोक्त प्रमाणार्थ देखो तफ़्सीरे आज़म् भाग १ पृष्ठ ९ से ५२ तक) यद्यपि इस सूरत में और भी बहुत सी विशेषताएं बतलाई गई हैं किन्तु हम विस्तार भय से उन सब का उल्लेख यहां नहीं कर सकते।

पारः अलिफ़् लाम् मीम् ॥१॥ सूरते बक़्र॥२॥ 'मदनी' रुकुअ़' ४०

आयत २८६ कल्मात् ६०२१ हुरूफ़् २५०००॥

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम् ‡ अलिफ़लाम्मीम् (१) ज़ालेकल्किताबो[§] ला रयब फ़ीहे हुदल्लिल्मुत्तक़ीन् (२) अल्लज़ीन यौ मेनून बिल् ग़यबेव युक़ी मुनस्सलात व मिम्मा रज़क्. ना हुम् युन्फ़ेक़ून् (३) वल्लज़ीन यौ मेनूनबिमा उन्ज़िल इलयक व मा उन्ज़िल मिन् क़ब्लेक व बिल् आख़िरते हुम् यूक़ेनून् (४) ऊलाइक अ़ला हुदम्मिरर्ब्बेहिम् व ऊलाईक हुमुल्मुफ़्लेहून् (५)

भाषाटीका–१ अलिफ़्लाम्मीम् २ वह पुस्तक निस्सन्देह है और डरने वालों के लिये शिक्षक है ३ जो अदृष्ट पर विश्वास करते, नमाज़ पढ़ते, और हमारे दिये हुए पदार्थों में से व्यय करते हैं ४ और जो विश्वास करते हैं जो उतारा गया तेरी ओर और तुझ से पूर्व, और उनका प्रलय में विश्वास है ५ उन्हीं ने प्राप्त किया है स्वपालक से आदेश, और वही छुटकारा पाने वाले हैं।

व्याख्या—बक़र का अर्थ है गाय, चूंकि इस सूरत

‡ इसका अर्थ पूर्व कर चुके हैं अतः पुनः पिष्टपेषण की आवश्यकता नहीं।

§ कतिपय भाष्यकार इसका अर्थ 'यह' भी करते हैं किंतु यह व्याकरणानुसार सर्वथा अशुद्ध है क्योंकि 'ज़ा' संकेत दूरस्थ के लिये ही होता है।

में गाय की महान्ता का वर्णन है । इसलिये इस का नाम सूरते बक़ रक्खा गया, यह सूरत .कुरान की सब सूरतों से बड़ी है । मुसलमानों का मन्तव्य सिद्धान्त जो कुछ इस में वर्णन हुआ है वह किसी और में नहीं, 'आयतुल्कुर्सी' जो सब कुरानी आयतों में श्रेष्ठ तथा सर्वोत्तम है वह भी इसी में सम्मिलित है, कहा जाता है कि इसकी एक २ आयत को अस्सी २ सहस्र फ़रिश्ते लाया करते थे 'इबने मसऊद' कहते हैं कि एक सहाबी रसूल ने शयतान को पकड़ लिया, शयतान ने कहा तुम मुझे छोड़ दो मैं तुम्हें एक ऐसी सूरत बतलाऊंगा कि जिस स्थान पर तुम उसे पढ़ोगे वहां मैं न रह सकूंगा। उन्होंने उसे छोड़ दिया और कहा बता वह कौनसी सूरत हैं। उस ने बताने से इन्कार किया उन्होंने उसकी उंगली में काट खाया तब शयतान ने बतलाया कि वह सूरते बक़ है, जिस स्थान पर इसका पाठ होता है वहां से शयतान "गोज़" करता हुआ भाग जाता है ।

एक समय जब यह 'साबित बिन् क़ैस' के अन्धकारमय गृह में पढ़ी गई तो उसका गृह जलते हुए दीपकों से जगमगा उठा । (देखो त० आ० भा १ पृष्ठ ५४) इस की पहली आयत को हुरूफ़ 'मुक़त्तआत्' और मुतशा बः भी कहते हैं ऐसी आयतें .कुरान में बहुत मिलती हैं किन्तु उन का

ठीक अर्थ कुछ भी नहीं किया जा सकता यों तो इस्लामी विद्वान् बहुतसी तावीलें करते हैं किन्तु .कुरान सूरत ३ रुकुअ् १ आयत ४ में लिखा है कि "व मा यअ्लमो तावीलहु इलल्ला हो व रासे खून फ़ील् इलमे यकूलून आमन्ना बिही" अर्थात् अल्लाह के अतिरिक्त कोई उसकी तावील नहीं जानता जो मनुष्य विद्या में प्रवीण हैं वे (तो यही) कहते हैं कि हम ईमान लाये इस पर। ऐसी सब आयतों पर ईमान रखना ही उचित है। मुसल्मानों का विश्वास है कि अल्लाह ने बाईबिल में एक और पुस्तक उतारने की प्रतिज्ञा की थी सो वह निस्सन्देह यह .कुरान ही है। पहली सूरत में यह प्रार्थना की गई थी कि हमें अनुगृहीत (मोमिन) पुरुषों को मार्ग दर्शा अतः अब उन का लक्षण वर्णन किया जाता है जो डरते हैं (अर्थात् परहेजगार) हैं और अदृष्ट (ग़ैब) यथा

क़यामत, दोज़ख, जन्नत, तक़दीर, फ़रिश्तों तथा .कुरान, इञ्जील, तौरेत, ज़बूर इत्यादि पुस्तकों पर विश्वास रखते हैं, और पांचों वक़्त की नमाज़ ठीक २ पढ़ते और ज़क़ात (ख़ैरात) देते हैं यही लोग सत्य मार्ग पर हैं और यही। मुक्ति (नजात) पाने वाले हैं।

इन्नल्लज़ीन कफ़रु सवाउन् अ़लय्हिम्
अ अन्ज़र्तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्हुम् ला या

मेनून् (६) खतमल्लाहो अला कुलबेहिम् व अला समए‡हिम् व अला अब्सारेहिम् गिशावा व्वलहुम् अजाबुन् अजीम् (७)

भाषाटीका—६ जो लोग काफ़िर हैं उन पर तेरा भय दिखलाना या न दिखलाना समान है, वे न स्वीकार करेंगे ७–मुहुर करदी है अल्लाह ने उन के हृदयों पर और उनके कान पर और उन के नेत्रों पर आवरण आच्छादित है, और उनके लिये महा कष्ट है।

व्याख्या—अब काफ़िरों का वर्णन किया जाता है, कुफ़्र का अर्थ है जान बूझ कर किसी वस्तु को छिपाना, अर्बी कोष में अन्न बोने वाले किसान को काफ़िर लिखा है क्योंकि वह जान कर अन्न को छिपाता है किन्तु क़ुरान में काफ़िर उन लोगों को कहा गया है जो यह जानते हुए भी कि ह० मुहम्मद खुदा के रसूल और क़ुरान सत्य ज्ञान की पुस्तक है तथा मूर्त्ति पूजा मूर्खता है, उस को अपने दिल में छिपाते थे—कहा जाता है कि संसार रचना के पूर्व ही खुदा ने काफ़िरों (इस्लाम के विरुद्ध मत रखने वाले) और मोमिन (अर्थात् मुसल्मान)

‡ यह प्रथम बचन है जिस का अर्थ है 'उन के कान पर' किंतु होना चाहिये उन के कानों पर व्याकरण की अशुद्धि प्रतीत होती है।

लोगों की संख्या निर्धारित कर दी है और उन से खुदा वैसे ही कर्म कराता रहता है, 'मुस्लिमबिन यसार से रवायत है कि उमर बिन खुत्ताब ने रसूलल्लाह से कुरान की इस आयत पर 'वइजा़ अखज़ इत्यादि' अर्थात् 'और जब तेरे प्रभु ने जनता की पीठों से निकाला उनकी सन्तान को' (समझने के लिये) प्रश्न किया तब आं हज़रत ने फ़रमाया 'जब अल्लाह ने आदम को उत्पन्न करके उन की पीठ (कमर) पर दाहिना हाथ फेरा तो निकाली उस में से सन्तान बस फ़रमाया इन को पैदा किया मैं ने जन्नत के वास्ते ये जन्नती लोगों जैसे कर्म करेंगे, पुनः उन की पीठ पर हाथ फेरा और निकाली उस मे से सन्तान बस फ़रमाया इन को पैदा किया मैंने दोज़ख़ के वास्ते ये दोज़ख़ी लोगों जैसे कर्म्म करेंगे, एक मनुष्य ने कहा 'हे रसूलल्लाह, तो फिर कर्म्म करने ही की क्या आवश्यकता है ? फ़रमाया आं अज़रत ने 'निश्चय, जब अल्लाह बन्दे को जन्नती पैदा करता है तो उस से मृत्यु पर्य्यन्त जन्नती लोगों जैसे ही कर्म कराता है और जब बन्दे को दोज़खी पैदा कराता है तो उस से मृत्यु पर्य्यन्त दोज़खियों जैसे ही कर्म कराता है' (संक्षिप्तार्थ) हदीस मिश्कात् भाग १ पृष्ठ २७-२८।

जब हज़रत मुहम्मद कुरान का प्रचार कर, उस पर

ईमान न लाने वालों को दोज़ख़ का भय दिखला रहे थे तो बहुत से हठी लोग फिर भी उन पर विश्वास न लाये तब उन के साथियों ने विस्मय से पूछा, क्यों हज़रत ! जब यह लोग भी हम जैसे ही हैं फिर यह ईमान क्यों नहीं लाते ? हालांकि आप उन को दोज़ख़ से डरा रहे हैं क्या इन्हें दोज़ख़ का भय नहीं ? इसी का उत्तर अल्लाह ने छटवीं आयत में दिया है कि हे मुहम्मद ! जिन लोगों को हम काफ़िर बना चुके हैं उन्हें तुम चाहे डराओ अथवा न डराओ वह कदापि ईमान न लावेंगे क्योंकि ज्ञान प्राप्त होने के केवल तीन ही साधन हैं या तो मनुष्य अपने मन से स्वयं ही भले बुरे का विचार कर सकता है या दूसरे मनुष्यों से सुन कर, अथवा सृष्टि नियम व पुस्तकादि को देख कर किन्तु ये काफ़िर तुम्हारी बातों पर कैसे ध्यान दे सकते हैं जब कि हम ने इनके हृदयों, कानों पर मुहर कर, इन की आंखों पर परदा डाल दिया, बस अब तुम इन्हें इन की हालत पर ही छोड़ दो अन्ततः यह हमारे पास ही तो आवेंगे, हम देख लेंगे, बस इन के लिये दोज़ख़ का महा कष्ट होगा।

व मिनन्नासे मँयक़ूलो आमन्ना बिल्लाहे वबिल्यो मिल् आ ख़िरे व मा हुम् बे मौमे

नीन् (१) यो ख़ादऊ नल्लाह व लल्ज़ीन आ मनू व मा यख़्दऊन इल्ला अन्फ़ोसहुम् व मा यश उरून् (२) फ़ी कुलूबेहिम्मरज़ुन् फ़ज़ाद हुमुल्लाहो मर्ज़ा व लहुम अज़ा बुन् अली मुँ बिमा कानू यक्ज़ेबून् (३) व इज़ा क़ील लहुम्ला तुफ़्सेदू फ़िल अर्ज़ क़ालू इन्नमा नह्नो मुस्लेहून् (४) अला ३ इन्न हुम् हुमुल्मुफ़ से दून व ला किल्ला यशाऊ-रुन् (५) इज़ा क़ील लहुम् ओमिन् कमा आ मनन्नासो क़ालू आ अनौमिनो कमा आ मनस्सुफ़ हाओ आला इन्न हुम् हुमुस्सुफ़ हाओ व ला किल्ला यअ लेमून् (६) व इज़ा लक़ुल्लज़ीन आमनू क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लो इला शयातीने हिम् क़ालू इन्ना मअ कुम् इन्नमा नह्नो मुस्तहज़ेऊन् (७) अ-ल्लाहो यस्तह्ज़ीओ बिहिम् वयमुद्दौ हिम् फ़ी तुग़्. यानेहिम् यअमहून् (८)

भाषाटीका—१ कतिपय मनुष्य ऐसे हैं जो कहते

हैं कि हम अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर विश्वास रखते हैं परन्तु वे कदापि मोमिन (आस्तिक) नहीं २–वे अल्लाह तथा विश्वासी लोगों को धोखा देते हैं यद्यपि वे अपने सिवाय किसी और को धोखा नहीं देते परन्तु वे नहीं समझते ३–उन के दिलों में रोग है बस अल्लाह ने अधिक कर दिया रोग उन का, और उन के लिये महा कष्ट है उन के असत्य भाषण के कारण ४–और जब उन से कहा जाता है कि पृथ्वी पर उपद्रव मत करो, तो कहते हैं कि हम तो शान्तिप्रसारक हैं ५–सचेत हो ! निश्चय वे उपद्रवी हैं परन्तु समझते नहीं ६–और जब उन से कहा जाता है कि ईमान लाओ जैसे और आदमी ले आये तो कहते हैं, कि क्या हम भी उसी प्रकार विश्वास कर लें जैसे कि मूर्ख करते हैं, सावधान ! वे ही मूर्ख हैं किन्तु समझते नहीं ७–और वे जब विश्वासियों से मिलते हैं तो कहते हैं हम भी विश्वासी हैं, और जब अपने असुरों के साथ एकान्त में बैठते हैं तो (उन से) कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ हैं निस्सन्देह हम तो उन से (अर्थात् मुसल्मानों से) उपहास करते हैं ८–अल्लाह उपहास करता है उनसे, और आकर्षित करता है उन को उन के उपद्रव में, वे बहके हुए हैं ।

व्याख्या—जिस समय क़ुरान शरीफ़ नाज़िल हो रहा था उस समय 'अरब' में प्रायः तीन प्रकार के मनुष्य थे एक तो वे जो क़ुरान और ह० मुहम्मद पर विश्वास ला चुके थे (अर्थात् मोमिन) दूसरे वे जो खुल्लम खुल्ला क़ुरान तथा ह० मुहम्मद का प्रतिरोध करते थे जिनको क़ुरान में काफ़िर कहा गया है, इनदोनों प्रकार के मनुष्यों का उल्लेख तो पूर्व हो चुका है, अब तीसरी श्रेणी वालों का जिन को 'मुनाफ़िक़्' कहा जाता था वर्णन है, 'मुनाफ़िक़्' ऐसे मनुष्य को कहते हैं जिस का आन्तरिक और बाह्य जीवन एक सा न हो अर्थात् मन में तो कुछ और रखता हो और मुख से कुछ और कहता हो, उस समय ऐसे मनुष्यों की संख्या कि 'गंगा गये तो गंगादास और जमुना गये तो जमुनादास भी अधिक थी' जब वे मुसलमानों से मिलते तो कह देते हम भी तुम जैसे ही विश्वासी हैं और जब अपनी टोलियों में जाते तो कहते हम तो केवल मुसलमानों को 'चकमा' देने गये थे, वास्तव में तो हम तुम्हारे ही साथ हैं, ऐसे ही लोगों से अल्लाह मुसलमानों को सावधान कर रहा है कि इन के कहने पर मत भूल जाना ये अपनी समझ में हमें धोखा देते हैं हालां कि ये धोखा स्वयं ही खा रहे हैं, क्योंकि जिस 'पौलिसी' से काम चला कर वे अपने

को दुनिया में बड़ा दक्ष समझे हुए हैं उस का भाण्डा तो 'क़यामत' के दिन फटेगा जब ये दोज़ख़ की ओर हांके जावेंगे और वहां चुल्लू भर पानी को तरसेंगे। यदि कभी पीने को कुछ दिया भी जायगा। तो वह ऊष्ण जल होगा अथवा पसीना या घावों में से निकली हुई पीक, यद्यपि इन के दिलों में ईर्षा, द्वेष, छल, कपट, शोक, भय, लज्जा, आदि रोग हैं परन्तु वे अल्लाह का क्या कर सकते हैं अल्लाह तो जलतों को और जलाता है वह तो ऐसे अधम पुरुषों का रोग अधिक ही कर देता है। इन्हें कई बार समझाया जा चुका है कि तुम पृथ्वी पर उपद्रव मत करो, चुपचाप ईमान ले आओ किन्तु एक ये हैं, जो टस से मस ही नहीं होते और उलटा कहते हैं कि क्या हम मूर्खों जैसा विश्वास करलें और सच्च बात तो यह है कि ये स्वयं ही महा मूर्ख हैं जो थोड़ेसे सांसारिक जीवनपर सदैव का स्थायी सुख-भोग (अर्थातजन्नत)छोड़े देते हैं। सातवीं और आठवीं आयतों के उतरने का यह कारण है कि एक दिन अब्दुल्लाबिन् उब्यी जो मुनाफ़िक़ों का सरदार था अपने इष्ट मित्रों सहित बाज़ार में चला आ रहा था सामने से "सहाबहः किबार" (ह० मुहम्मद के प्रतिष्ठित साथी) चले आ रहे थे अब्दुल्ला ने उन्हें दूर से ही देख कर अपने साथियों

से कहा कि देखो मैं इन अन्धा धुन्द विश्वास करनेवाले मूर्खों को कैसा बनाता हूं, अभी तक वह निकट न आये थे कि इस ने दूर ही से ह० अबुबक्र का हाथ पकड़ कर उनकी तारीफ़ों के पुल बान्ध दिये कि शाबास है आपको जो रसूलल्लाह के ऊपर जानो माल कुर्बान कर डाला "आप ऐसे हैं" २ धन्य है आपका जीवन! जब वह कई एक को इसी प्रकार इस्तुमलीह (स्तुति रूप में निन्दा) कर चुका तो ह० अली ने कहा अब्दुल्लाह खुदा से डर, बहुत बातें न बना, वह यह सुन कर कहने लगा 'वाहवा' २ आप क्या कहते हैं मैं तो आप जैसा सच्चा मुसल्मान हूं यह कह कर वे पृथक् २ होगये, अब्दुल्ला ने पुनः अपने साथियों से कहा देखा मैंने उन का कैसा उपहास किया तुम भी जब इन से मिला करो ऐसा ही किया करो यह तो इधर ऐसो कह ही रहा था उधर अल्लाह ने झटपट यह आयतें उतार कर मुसल्मानों को सचेत कर दिया * (देखो, त० आ० भा० १ पृष्ठ ९८)

उलाइ़ कल्लज़ीन श्तरु ज्ज़लालत बिल्हुदा फ़मा रबेहत् तिज्जारतुहुम् व माकानू मोह-तदीन्(९) मसलो हुम् कमसलिल्लज़िस्तो क़द

---

* कुरान की अधिकतर आयतें आवश्यकतानुसार ही उतरती हैं

नारा फ़लम्मा अज़ाअत् मा होलहु ज़ह ब
ल्लाहो बे नूरेहिम् व तरक हुम् फ़ी ज़ु लुमा
तिल्ला युब्सेरून् (१०) सुम्मुन्, बुक्मुन्, उम्युन्,
ला यर्जेऊन् (११) ओ कसय्येबिम्मि नस्समए
फ़ी हे ज़ुलु मातं व रुअदुं व ब .र्कुन् यज्अ़लून
असाबे हुम् फ़ी आज़ाने हिम्मि नस्सवाई
.के हज़रल्मौते वल्लाहो मुही तुं बिल्काफ़े-
रीन् (१२) यकादुल्बर्क़ो यख्त़ फ़ो अब्सारहु
म् कुल्लमा आ ज़ा लहुं मशौ फ़ीहे व इज़ा
अज़् लम अ़लय् हिम् क़ामू व लौशाअ अ.
ल्लाहो लज़हब बेसम् ए हिम् व अब्सारेहिम्
इन्नल्लाह अ़ला कुल्ले शय् इन् क़दीर् (१३)

भा० टी०—९-ये ही हैं जिन्हों ने उपदेश के स्थान में अज्ञान ख़रीद लिया, बस कुछ भी लाभ न पहुंचाया उन के इस वाणिज्य ने, और न बने वे सत्य ज्ञानी। १०-उन का दृष्टान्त ऐसा है जैसा कि किसी व्यक्ति ने अग्नि प्रज्वलित की, अब उस का स्थान दीप्तिमान हुआ तो अल्ला ने उन का प्रकाश हरण कर लिया, और उन्हें अन्धकार ही में छोड़ दिया, बस नहीं देखते ११-बहरे

हैं, गूंगे हैं, अन्धे हैं, वे नहीं फिरेंगे १२—अथवा (उन का दृष्टान्त ऐसा है) गगन से वृष्टि हो, उस में अन्धकार गरजन और विद्युत हो और कड़क के कारण मृत्यु भय से वे अपने कानों में अंगुलियां डाल लें, और अल्लाह काफ़िरों को घेर रहा है, १३—समीप है कि बिजुली उन के नयन (दर्शन-शक्ति) हरण कर ले जाय, जब वह उन पर प्रकाशमान होती है तो वे उस में चलते हैं और जब उन पर अन्धकार रहता है तो वे स्थिर रहते हैं, यदि अल्लाह चाहे तो उन के श्रोत्रों और नेत्रों का हरण कर ले, निश्चय अल्लाह का प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व है।

व्या०—इन आयतों में भी "मुनाफ़िक़ों" का ही वर्णन है कि ये जो इस्लाम को छोड़ कर, कुफ़्र ख़रीद रहे हैं उन का यह व्यापार कुछ भी लाभदायक न होगा, यह सदैव भटकते ही रहेंगे, फिर उन के सम्बन्ध में एक दृष्टान्त दिया गया है कि, जैसे एक मनुष्य कुफ़्र रूपी अन्धकार में भटकते २ घबरा उठा, पुनः उस ने उद्योग करने पर इस्लाम रूपी रोशनी पा ली, जब उस से कुछ शान्ति प्रतीत होने लगी तो अल्लाह ने उस की रोशनी छीन ली और उन्हें कुफ़्र के अन्धेरे में ही भटकने के लिये छोड़ दिया। चूंकि यह रसूल के कहने को

भी नहीं सुनते अतः बहरे हैं। ये अपने निश्चित कथन के अतिरिक्त मुंह से और कुछ नहीं निकालते अतः गूंगे हैं, ये इस्लाम की रोशनी को जो सूर्य की भांति प्रकाशवान है नहीं देखते इसलिये ये अन्धे हैं। जब इन की ऐसी ही अवस्था है तो इन के मुसल्मान होने की आशा छोड़ देनी चाहिये। ये तो कदापि इस ओर न लौटेंगे। उस समय कुछ ऐसे भी लोग थे जो मुसल्मानों की विजय हो जाने पर तो मुसल्मानों के साथ "माले-ग़नीमत" (युद्ध में प्राप्त हुआ धन) में हिस्सा बख़रा, लेने के लिये मुसल्मान बन बैठते थे और जब मुसल्मानों पर कुछ आपत्ति आती थी तो झट मुसल्मानी से "अस्तीफ़ा" दे बैठते थे। ऐसे ही लोगों के सम्बन्ध में दूसरा दृष्टान्त दिया गया है, यथा कोई मनुष्य वृष्टि तो चाहता हो किन्तु उस की कड़क के समय जान के भय से कानों में उंगलियां दे ले। हालांकि अंगुलियां देने पर भी यदि बिजली चाहे तो उस की जान ले सकती है किन्तु ये लोग नहीं जानते अर्थात् ये लोग इस्लाम रूपी वृष्टि से तो लाभ उठाते हैं किन्तु कड़क रूपी आपत्तियों के समय गृह में इस्लाम की ओर से कानों में तेल डाल कर बैठ जाते हैं हालांकि अल्लाह अगर मौत दे तो वह घर में बैठे हुओं को भी दे सकता

है, भला ! खुदा से बच कर ये लोग कहां जा सकते हैं। यहां यह कह देना अनावश्यक न होगा कि 'बिजली' या बिजली की कड़क को इस्लाम कैसा मानता है, हम यथातथ्य तफ़सीर से लिखे देते हैं "रअ़द (कड़क) अक-सर उल्माओं के नज़दीक उस फ़रिश्ते का नाम है जो आस्मान को डांटता है। इब्ने अब्बास कहते हैं यहूद ने आं हज़रत से पूछा रअ़द क्या है ? फ़रमाया, वह एक फ़रिश्ता है जिस के हाथ में आग के चन्द कोड़े हैं जिन से वह बादलों को हांकता है। उन्होंने कहा अच्छा, यह आवाज़ क्या है ? फ़रमाया, यह उसकी डांट है कि बादल को जहां का हुक्म हुआ है वहीं जाए। उन्होंने कहा सच है "फ़लासफ़ः (वैज्ञानिक) और हुमुक़ः (मूर्खों) का यह क़ौल कि "पानी ज़मीन के बुख़रात से, और बिजली, बुख़रात के सदमे (टक्कर) से पैदा होती है "शरीअ़त" (इस्लामी मन्तव्य) के नज़दीक बेअसल बात है। 'बर्क़' (बिजली) उस नूर के कोड़े की चमक को कहते हैं जो फ़रिश्ते के हाथ में है, जिस से वह बादल को घुड़कता है (देखो त० आ० भा० १ पृष्ठ १०७) कुछ एक विद्वान् ऐसा भी कहते हैं कि "बर्क़" एक फ़रिश्ते का नाम है उस के "आदमी, शेर, ख़िच्चर, और बैल" के समान चार मुख हैं। उस की पूंछ के फटफटाने से जो रोशनी

और आवाज़ निकलती है उस का ही नाम "बिजली" है। शायद कोई वैज्ञानिक साइंस के आधार पर इसे असत्य कहने के लिये तैयार होजाए, किन्तु यह केवल साहस मात्र है। भला कल की निकली हुई बेचारी सायंस इन पुरानी खुदाई बातों को कैसे झुटला सकती है? वास्तव में खुदा की कुदरत खुदा ही जाने। सम्भव है कि ऐसा ही हो। क्यों पाठकगण! आपकी इस विषय में क्या सम्मति है?

या अय्योहन्नासो अ्बुदू रब्बकुमुल्लज़ी ख़लक़ कुम् वल्लज़ीन मिन्क़ब्ले कुम् लअ-ल्लकुम्तत्तक़ून (१) ल्लज़ीजअ्ल लकुमुल् अर्ज़ फ़िराशँ वस्समाअ बिनाअं व अन्ज़ल मिनस्समए मा अन् फ़ख़्रज बिही मिनस्स-मराते रिज़्क़ल्लकुम् फ़ला तज्अ्लूल्लाहे अन्दादँ व अन्तुम् त अ्लेमून् (२)

भा० टी०—१–हे मनुष्यो! अपने प्रभु की जिसने तुम्हें तथा तुम्हारे पूर्वजों को उत्पन्न किया बन्दना करो, स्यात् तुम संयमी (परहेज़गार) बन जाओ, २–उसने भूमि को तुम्हारी शय्या, और आकाश को छत बनाया और नभोमण्डल से जल उतारा, जिस से तुम्हारे खाने

के लिये फल (मेवे) उपजे, बस मत बनाओ शरीक (तुल्य) अल्लाह का और तुम जानते हो।

व्याख्या—जिस समय कुरान उतर रहा था, अरब में 'बुत परस्ती' (अर्थात् प्रतिमा पूजा) का बड़ा भारी ज़ोर था, प्रत्येक 'क़बिले' का अपना जुदा २ बुत था, "कअ़बे" के इर्द गिर्द ३६० 'बुत' रक्खे हुए थे, मूर्त्ति-पूजकों का विश्वास था कि ये मूर्त्तियां हमें मुक्ति दे देंगी, इसीलिये वे उन के भोगार्थ पशुओं का बलिदान किया करते थे। ऐसे लोगों को कुरान ने 'मुशरिक' बतलाया है। 'मुशरिक' का शब्दार्थ शरीक करने वाला है अर्थात् जो एक वस्तु के गुण दूसरीमें सम्मिलित करदे। चूंकि ये लोग खुदा के गुण मूर्त्तियों में मानते थे इसी कारण से इनका नाम भी मुशरिक पड़ गया। इन आयतों में इन लोगों को उपदेश दिया गया है कि देखो! ये तुम्हारे 'बुत' न तो किसी वस्तु को पैदा ही कर सकते हैं और न किसी को मार ही सकते हैं, इन्हें तो तुम स्वयं अपने हाथों से गढ़ते हो, सोचो! यह तुम्हारे लिये तो किसी पदार्थ को उत्पन्न कर ही क्या सकता है, ये अपना पेट भी स्वयं नहीं भर सकते, उस के लिये भी यह तुम्हारे भोग की ही प्रतीक्षा करते हैं। फिर न जाने तुम इन के पीछे क्यों हाथ धोकर पड़े

हुए हो । बस इन्हें छोड़ कर उसी .खुदा की जिसने तुम्हें तथा तुम्हारे पूर्वजों को उत्पन्न करके तुम्हारे सुख-भोगार्थ नाना प्रकार के पदार्थ सृष्टि में रचे हैं, इबादत (पूजा) करो, और किसी को उसकी बराबरी का दर्जा मत दो, तुम स्वयं जान सकते हो, कि कहां तो यह 'अपाहज' बुत, और कहां वह सर्वशक्तिमान् अल्लाह ?

व इन् कुन्तुम् फ़ी रय्बिम्मा नज़्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्देना फ़ातू बे सूरतिम्मिस्लेही वद्ऊ शोहदा अकुम्मिन्दू निल्लाहे इन कुन्तुम् सादे-क़ीन् (३) फ़इं लम् तफ़्अ़लु वलन् तफ़् अ़लू फ़त्तकुन्नारल्लती वक़ूदो हन्नासो वल्हिजा-रतो उइद्दत् लिल्काफ़ेरीन् (४)

भा० टी०—३—और जो कुछ (वाणी) हमने अपने सेवक (मुहम्मद) पर उतारी है यदि तुम को उसमें कुछ संशय हो तो, तुम उस के सदृश एक सूरत लेआओ, और अल्लाह के अतिरिक्त अपने साक्षियों को बुला लो यदि तुम सच्चे हो, ४—बस तुम ऐसा नहीं कर सके और कदापि न कर सकोगे तो उस अग्नि से डरो जिस का ईंधन मनुष्य तथा पत्थर हैं।

व्याख्या—जब आवश्यकतानुसार ही धड़ाधड़ आयतें उतरने लगीं, तो बहुधा मनुष्यों का ऐसा निश्चय हो गया कि मौक़ा (अवसर) पड़ने पर ये आयतें 'मुहम्मद' स्वयं ही गढ़ लेता है और उन्हें मनवाने के लिये ख़ुदा का नाम झूंठ मूंठ ले देता है। भला, ख़ुदा को क्या आवश्यकता है? जो बात २ पर आयतें भेजा करे, आज तक कभी भी ऐसा नहीं हुआ है। ऐसे विचार के मनुष्यों ही को इन आयतों में आह्वान (चेलेंज) है। हे मूर्ख लोगो! यदि तुम कुरान को ख़ुदाई पुस्तक नहीं मानते हो, और तुम्हारा यह गुमान है कि 'मुहम्मद' ही आयतें बनाता है, सो 'मुहम्मद' तो उम्मी'* है, वह ऐसी आयतें बना ही कैसे सकता है? किन्तु तुम तो पढ़े लिखे हो, बस तुम और तुम्हारे सब साथी 'कुरान' जैसी एक सूरत तो बना लाओ। तब हम जानें कि तुम अपने कथन में सच्चे हो। और जब तुम अभी तक ऐसा नहीं कर सके और यह हमारी भविष्य वाणी है कि तुम भविष्य में भी ऐसा कदापि नहीं कर सकोगे, तो दोज़ख़ की उस अग्नि से भय क्यों नहीं खाते जो तुम जैसे कु-

* 'उम्मी' बिना लिखे पढ़े मनुष्य को कहते हैं, मुसलमानों का विश्वास है कि ह० "मुहम्मद" बिलकुल अनपढ़ थे।

काफ़िरों और पत्थरों के लिये ही प्रचण्ड की गई है।*

चूंकि, 'दोज़ख़' के 'अज़ाब' की धमकी क़ुरान में स्थान स्थान पर दी गई है, अतः आवश्यक प्रतीत होता है कि पाठकों के मनोरंजनार्थ उसका संक्षिप्त वर्णन यहां पर कर दिया जाय। 'अबुदल्ला बिन अब्बास' से रवायत है कि क़यामत के दिन दोज़ख़ सातवीं ज़मीन के नीचे से लाई जाएगी, और उसके चारों ओर फ़रिश्तों की क़तारें होंगी, उनकी प्रत्येक क़तार के फ़रिश्तों की संख्या समस्त संसार के मनुष्यों और 'जिन्नात'† से सत्तर हज़ार गुणा अधिक होगी. वे (फ़रिश्ते) उस (दोज़ख़) को उसकी लगाम से खींचेंगे, और दोज़ख़ के चार पैर हैं और हरएक पैर की लम्बाई एक हज़ार वर्ष का मार्ग

* दोज़ख़ की अग्नि में पत्थर होने के सम्बन्ध में इस्लामी विद्वानों के दो पक्ष हैं। एक पक्ष तो यह कहता है, कि मुशरिक लोग ख़ुदा के स्थान में बुतों को पूज कर उन्हीं से मुक्ति मान रहे हैं अतः उपासक और उपास्य दोनों ही दोज़ख़ में डाले जावेंगे। दूसरा पक्ष कहता है कि वे पत्थर 'गंधक' के होंगे और वे इसलिये दोज़ख़ की अग्नि में डाले जावेंगे, कि जिसकी दुर्गन्धि से दोज़ख़ी लोग विशेष कष्ट उठा सकें, कहते हैं कि उनका धुआं लगते ही सब मनुष्य अचेत हो जावेंगे॥

† मुसलमान लोग भूतों के सदृश एक योनि विशेष मानते हैं।

हैं‡ और उसके तीस हज़ार सिर हैं और हरएक सिर में तीस हज़ार मुख हैं और हरएक मुख में तीस हज़ार दांत हैं और प्रत्येक दांत 'कोह उहद' (अरब के एक बहुत बड़े पर्वत का नाम है) से तीन गुणा बड़ा है, और हर मुंह में दो लब (ओष्ठ) हैं उनमें से हरएक की लम्बाई, चौड़ाई कुल दुनिया के बराबर है, हर ओष्ठ में लोहे की एक शृङ्खला पड़ी हुई है और प्रत्येक शृङ्खला में ७००० हल्के (कड़ियां) हैं, और हरएक कड़ी को बहुत से फ़रिश्ते पकड़ रहे हैं, और उसमें सात दर्वाज़े हैं, एक दर्वाजे से दूसरे दर्वाजे का मध्यान्तर (फ़ासला) ७० वर्ष का मार्ग है, बस वह अर्श* की बाईं ओर लाकर खड़ी करदी जायगी, और वह दोज़ख़ियों को देख कर सन्सनाएगी और बड़े २ महलों के समान अपनी चिंगारियां

‡ प्रायः 'हदीसों' में नाप का ऐसा ही पैमानः प्रयोग में लाया गया है। यदि यह और बतला दिया जाता, कि किस की चाल से १००० वर्ष का मार्ग है, तो हिसाब लगाने में कुछ सुगमता प्राप्त हो जाती, हमारी सम्मति में तो ऊंट या ख़िच्चर की चाल से ही समझना चाहिये क्योंकि हदीसों में बहुधा इन्हीं का उदाहरण दिया गया है। ज़ेपलेन, रेल, मोटर तो उस समय विद्यमान ही न थीं।

* अर्श के मअ़ने है 'तख़्ते रब्बुल आलमीन' देखो, मुन्तहयुल अरब' अरबी कोश, मुसलमानों का विश्वास है कि क़यामत के दिन ख़ुदा अर्श पर मैदान में आएगा और सब मुर्दों को पुनः जिला कर दोज़ख़ और जन्नत में जाने का कतई फ़ैसला कर देगा।

उड़ाएगी, बस जिस दिन काफ़िर लोग उसकी ओर हांके जाऐंगे तो उन के मुँह स्याह, और उन की आंखें नीली होंगीं, और फ़रिश्ते उन को जञ्जीरों से जकड़े हुए होंगे, उनके बाएं हाथ उनकी गर्दन पर, और दाहिने मोंढ़ों के बीच में से निकलते हुए उनकी छाती पर बांधे हुए होंगे, एक जञ्जीर मुख से डाल कर.......... में से निकाली जायगी, फ़रिश्ते उनको गुर्ज़ों से मार रहे होंगे, किन्तु वे चिल्ला भी न सकेंगे क्योंकि उस दिन उन के मुखों पर मुहुर कर दी जायगी। जब वे दोज़ख़ में पहुंचेंगे तो उन को 'राल' और 'गन्धक' के वस्त्र दिये जायँगे, वे आग से जल्दी २ जलेंगे किन्तु पुनः २ वैसे ही और वस्त्र पहनाए जाया करेंगे, जिस से उन को खूब ही कष्ट पहुंचे, उनके बदन की खालें भुन कर कबाब हो जायगीं, किन्तु वे भी हरएक समय बदलती ही रहेंगी, वहां की गर्मी यहां की गर्मी से कहीं अधिक होगी। कहते हैं कि जब ह० 'आदम' पैदा हो चुके, और उनको खाना पकाने के लिये आग की आवश्यकता हुई, तो अल्लाह ने 'जिब्राईल' फ़रिश्ते को आज्ञा दी, कि तुम दोज़ख़ के प्रबन्धकर्त्ता से कुछ आग ले आओ, इन्होंने वहां जाकर अंगुली के एक 'पोर' बराबर आग मांगी, प्रबन्धकर्त्ता ने उत्तर दिया यदि मैं तुम को इतनी आग दे दूं तो

निश्चय, सातों आस्मान और सातों जमीनें, उसकी गर्मी से अभी पिघल जाएंगीं, जिब्राईल ने कहा अच्छा इससे आधी ही दे दो, फिर उस ने उत्तर दिया कि उस मे आधी देने पर भी न आस्मान से पानी बरसेगा और न ज़मीन से सब्ज़ी उग सकेगी, जिब्राईल लौट कर खुदा के पास आए कि हे प्रभो! मैं कितनी आग लाऊं? खुदा ने कहा कि केवल एक परमाणु। बस जिब्राईल ने इतनी ही ले कर उस को सत्तर बार सत्तर समुद्रों में धोया फिर उस को ह० आदम के सामने सब से ऊंचे पर्वत पर रक्खा, किन्तु वह पहाड़ शीघ्र ही उस की गर्मी से पिघल गया और आग अपनी जगह (अर्थात् सातवीं ज़मीन के नीचे) ही पहुंच गई, बस यहां केवल उस का धूंवां ही पत्थरों और लोहे में शेष रह गया, जो आज तक आग का काम दे रहा है' (दक़ाए .कुल् अख़बार बाब ३३ पृष्ठ ११३, ११४) पाठक गण! आप इसी से दोज़ख़ की गर्मी का अनुमान कर लीजिये, यह भी कहा जाता है उस दिन ये सूरज और चांद भी गर्मी अधिक करने के लिये दोज़ख़ ही में भेज दिये जायँगे और आज कल तो सूरज की इधर पीठ है उस दिन उस तरफ इस का मुँह होने से और भी अधिक गर्मी होगी, फिर लिखा है कि काफ़िरों को दो 'जूते' केवल आग के ही

मिलेंगे, और वे गर्मी और प्यास की वजह से चिल्लाएंगे किन्तु उन की कोई कुछ भी न सुनेगा, उन को पीने के लिये इतना गर्म पानी दिया जायगा कि उन के पेट में पहुंचते ही वहां जो कुछ भी होगा जल जायगा, और उन की अँतड़ियां बाहर निकल पड़ेंगीं, कभी २ उन्हें पीने के लिये ऐसा बदबूदार पीप मिलेगा यदि उसका एक डोल भर कर दुनिया में डाल दें तो सारे आदमी उसकी दुर्गन्धिमात्र ही से मर जाएं, और जब काफ़िरों को उस समय भूंख लगगी तो उन्हें 'सेंहुड़' का कांटेदार वृक्ष खाने को मिलेगा, बस वह गले में अटक कर न इधर होगा, न उधर होगा, इस से उन्हें महाकष्ट होगा, तत्पश्चात् वे चीख़ २ कर और धहाड़ें मार २ कर ऐसे रोयेंगे जिस से उन की आंखों से आंसुओं की नालियां बह निकलेंगीं, और जब आंसू नहीं गिरेंगे तो जख़्मी होने के कारण खून के आंसू निकलेंगे और वे इतने अधिक होंगे कि उस में किश्तियां चल सकेंगी, यहीं तक बस न होगी बल्कि उन का सिर हांड़ियों की तरह भदाभद २ उबलेगा और उन्हें ऊंट की गर्दन के बराबर सांप, और काले ख़िच्चर की बराबर बिच्छू, हरएक समय डसते रहेंगे। यह केवल संक्षेपतः वर्णन किया गया है (अधिक के लिये देखो हदीस मिश्कात् भाग १ बाब दोज़ख़, बदक़ाए कुल अख़बार बाब ३३ से ३५ तक)

व बश्शेरिल्लज़ीन आमनू व अमेलु स्सालहाते अन्नालहुम् जन्नातोन् तजरी मिन् तहतेहल् अन्हारो कुल्लमा रु.जेकू मिन्हा मिन् समरतिर्रिज् क़न् क़ालू हाज़ल्लज़ी रु ज़िक्नामिन् क़ब्लो व उतुबिही मुत शाबेहन् व लहुम् फ़ीहा अज़ वा जुम्मु तहहरतुँ व हुम फ़ी हा ख़ालेदून् (५)

भा० टी० ५—और हर्ष समाचार सुना उन लोगों को जो विश्वास लाये, और जिन्होंने शुभ कर्म किये कि निश्चय, उनके लिये जन्नतें* हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं वे जब वहां का कोई फल खांयगे तो कहेंगे यह तो वही फल है जो हम ने पूर्व (दुनिया में) खाया था, उन के समीप वहां एक ही प्रकार के फल लाये जांयगे और उन के लिये वहां स्वच्छ स्त्रियां भी होंगी, वे सदैव वहां निवास करेंगे।

व्या० जब काफ़िरों को दोज़ख़ का भय दिखलाया

* जैसा कि रेल गाडी में 'फ़स्ट' सेकण्ड, इण्टर आदि, कई दर्जे होते हैं इसी प्रकार जन्नत में भी आठ दर्जे होंगे, कोई २ कहता है कि १०० दर्जे होंगे, बस जो जैसा कर्म करेगा वैसे ही दर्जे में प्रविष्ट हो सकेगा, इस से सिद्ध होता है कि कर्म्म की प्रधानता वहां भी होगी।

जा चुका तो मोमिन लोगों को जन्नत की खुश़ख़बरी सुनानी भी आवश्यक थी अतः इन आयतों में सङ्केत मात्र जन्नत का कुछ वर्णन है, जन्नत का सविस्तर हाल हदीसों में लिखा गया है किन्तु वह इतना विस्तारपूर्वक है कि यदि उस सब का उल्लेख किया जाय तो एक बड़ी पुस्तक पृथक् बन सकती है, हम यहां केवल इन ही आयतों से सम्बन्ध रखने वाला विषय उद्धृत करते हैं, और यथा अवसर अधिक लिखने का भी प्रयत्न करेंगे।

"अबूहुरैरः ने कहा, रसूलल्लाह कुछ जन्नत का बयान कीजिये, आपने फ़रमाया, उसकी एक ईंट सोने की, और एक ईंट चांदी की, मोती की कङ्करियां, केसर की मिट्टी, और कस्तूरी का गारा है। जो उसमें दाखि़ल हो, खूब आनन्द भोग करे, कभी शोकातुर न हो, सदैव उसी में रहे और उसे कभी मौत न आए, और न उस के वस्त्र कभी जीर्ण हों, और न उस को कभी बुढ़ापा सताऐ, फिर कहा कि नहरें जन्नत की मुश्क के पहाड़ से निकली हैं, और वहां पर शहद, दूध, शराब की बहुत सी नहरें बहती हैं। फिर इब्ने कसीर से रवायत है कि जन्नत में बहुत से लड़के जन्नती लोगों के आस पास (खजूर, अंगूर आदि) मेवे लिये फिरते हैं' जब कोई मेवा खा लेते हैं तो फिर वैसा ही मेवा वे लड़के देते हैं,

जन्नती कहते हैं यह तो हम ने खा लिया (या पहले खाया था) तो वे लड़के कहते हैं, अजी ! इसके रङ्ग पर मत भूलिये, ज़रा चखिये तो सही, इसका ज़ाईक़ा कुछ और ही है।' फिर मन्कूल है इब्ने अब्बास से कि 'बेज़ख' नामकी एक नहर जन्नत में है उस पर याकूत (पत्थर) के खेमे हैं उसमें लड़कियां उगती हैं, जन्नती आपस में कहेंगे 'आओ बेज़ख पर चलें, वे जब जाऐंगे तो लड़कियां खुश 'अदाइयां' करेंगी, फिर जिस आदमी को वे अच्छी मालूम होंगी वह उनका हाथ पकड़ेगा, बस वे साथ हो लेंगी और उस जगह दूसरी लड़कियां उग आऐंगीं। फिर अबुहुरेरः से रवायत है कि फ़रमाया रसूलल्लाह ने, कि जन्नत के सब से छोटे दर्जे वाले को ७२ हूरें दुनिया की स्त्रियों के अतिरिक्त मिलेंगी। फिर अब्दुल्ला बिन अबी औफ़ी से रवायत है कि ५०० हूरें ४००० क्वारी औरतें और आठ हजार सयोबा (रांड) औरतें मिलेंगी* (खुलासतुल्ल-

※ कतिपय मनुष्य इस्लामी विद्वानों से ऐसा प्रश्न किया करते हैं कि जब 'जन्नत' में मुसल्मान पुरुषों को तो बहुत सी हूरें, और अन्य स्त्रियां भी मिलेंगी, किन्तु बेचारी मुसलमानी स्त्रियों को क्या मिलेगा ? इस का उत्तर खुलासतुल तफ़ासीर पृष्ठ २० पंक्ति १२ में दिया गया है। उस को हम यहां यथा तथ्य उद्धृत करते हैं। 'अज़वाज' का लफ्ज़, मर्द और औरत दोनों को शामिल है यानी मर्दों को दुनिया की औरतें हूरें (मिलेंगी) और औरतों को मर्द मिलेंगे । ठीक ! न्याय भी यही कहता है ।

फामीर(पृष्ठ १९, २० छापा लखनऊ सन् १३२९ हिजरी) कहा जाता है कि जो आदमी जन्नत में जायँगे उन सब के चहरे चौदहवीं रात के चांद की समान होंगे, और वे कभी भी वृद्ध न होंगे, और उन को दुनिया से १०० गुणा कामदेवकी शक्ति अधिक होगी। वे जब चाहेंगे एक दम में ही गर्भ स्थित हो कर सन्तान उत्पन्न होजाएगी और स्त्रियों को प्रसव दुःख कुछ भी न होगा। उन सब की आयु ३० वर्ष की ही होगी, और न जन्नत में किसी प्रकार की गन्दगी होगी, न वे मल मूत्र त्याग करेंगे, न उनकी और किसी इन्द्रियों से किसी प्रकार का भी मलका निकास होगा, बस उन्हें केवल एक डकार आया करेगी उसी से भोजन पच जाया करेगा, उनके सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप से इतना कह देना ही पर्याप्त है कि उन को वहां पर किसी प्रकार का भी कष्ट न होगा प्रत्युत वे जो कुछ भी चाहेंगे सो उन्हें अवश्य और शीघ्र मिलेगा। (देखो हदीस मिश्कात् बाबुल्जन्नते)

इन्नल्लाह लायस्तही अंयज़्रिब मसलम्मा बऊज़तन् फ़मा फ़ौक़हा फ़मल्लज़ीन आमनूफ़ यअ्लमून अन्नहुल्हक्को मिर्रब्बेहिहम् व अन्नल्लज़ीनकफ़रु फ़यक़ूलून माज़आ अरा-

दल्लाहो बे हाज़ा मसलन् युज़िल्लोबिही क़सीरँव यहदी बिही कसीरा व मा युज़िल्लो बिही इल्लल्फ़ास्क़ीन् (६)

भा० टी० ६—अल्लाह मच्छर, अथवा उस से भी उत्कृष्ट वस्तु का उदाहरण देने से लज्जित नहीं होता, बस जो विश्वासी हैं वे जानते हैं कि वह ठीक उन के प्रभु की ओर से है, परन्तु जो काफ़िर हैं वे कहते हैं कि अल्लाह का दृष्टान्त से क्या प्रयोजन ? इस से वह बहुतों को मार्गभ्रष्ट करता है और बहुतों को उपदेश देता है, मार्गभ्रष्ट तो केवल कुकर्म्मियों का ही करता है।

व्या०—इस आयत में अल्लाह ने विरोधियों के एक आक्षेप का उत्तर दिया है, वह यह कि जब अल्लाह ने पूर्वोक्त आग और पानी का दृष्टान्त सुनाया था तो बहुत से मनुष्य कहने लगे कि अल्लाह को ऐसी छोटी२ वस्तुओं का उदाहरण देने की क्या आवश्यकताहै ? उसका काम तो लोगों को अच्छा अच्छा उपदेश ही सुनाना है। ऐसे उदाहरण देना तो किसी मनुष्य का ही कथन हो सकता है। अल्लाह कहता है कि आग, पानी तो बड़ी चीजें हैं हम तो मच्छर अथवा उससे भी निकृष्ट उदाहरण दे सकते हैं क्योंकि किसी छोटी वस्तु का

नाम लेने से कोई भी निन्दनीय नहीं हो सकता, देखो इन ही उदाहरणों के कारण तुम जैसे मूर्ख भटक गये, और बहुत से बुद्धिमान मनुष्यों ने इन ही से सुमार्ग प्राप्त कर लिया, बस इन से यही हमारा प्रयोजन था।

अल्लज़ीन युन्कुज़ून अह् दुल्लाहे मिन बाद़े मिसाक़े ही व यक़्तऊन मा अमर ल्लाहोबिही अंयूसला व यफ़्सेदुन फ़िल अर्ज़ उलाईक हुमुल्ख़ासेरुन् (७)

भा० टी० ७ —जो पुष्टि हो जाने के पश्चात् भी अल्लाह का प्रण भंग करते हैं, और जिस मेल की अल्लाह ने आज्ञा दी है उस का ध्वंस कर पृथ्वी पर उपद्रव करते हैं, वेही हानि उठाने वाले हैं।

व्या०—इस आयत में ईसाईयों और यहूदियों को लताड़ा गया है, कहते हैं कि इंजील और तौरेत में अल्लाहने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं एक पैग़म्बर को किताब लेकर और भेजूंगा। जब वह आएं तो तुम उस पर अवश्य ही विश्वास लाना, इस को पढ़ कर ईसाई और यहूदी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, किन्तु जब ह० मुहम्मद कुरान लेकर व पैग़म्बर बन कर आए तो इन लोगों ने ईमान लाने

से इन्कार कर दिया । ऐसे ही लोगों के लिये अल्लाह कहता है कि जो अल्लाह के पैग़म्बर भेजने के प्रण को अपनी प्रतीक्षा की पुष्टि के पश्चात् भी ईमान न लाकर भंग करते हैं और आपस में मेल जोल पैदा न कर के बात का बतङ्गड़ बना कर उपद्रव मचाते हैं तो ये लोग अवश्य हानि उठावेंगे क्योंकि बिना ह० मुहम्मद पर विश्वास लाए वे कदापि जन्नत में न जा सकेंगे ।

के यफ़ तकफ़ुरून बिल्लाहे व कुन्तुम् अम्वातन् फ़ अहयाकुम् सुम्मु युमीतकुम् सुम्म यो हयीय कुम् सुम्म इलय हे तुर्जेऊन् (८

भा० टी०—तुम कैसे नहीं मानते अल्लाह को, (देखो) तुम मृत थे उस ने तुम्हें जीवन दिया, तुम फिर मरोगे वह पुनरपि तुम को जीवन प्रदान करेगा, अन्त को तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे ।

व्या०—इस आयत में नास्तिकों को सम्बोधित करके कहा जाता है कि तुम ख़ुदा के अस्तित्व (हस्ती) से क्यों इन्कार करते हो ? जब कि तुम ख़ुदा को नहीं मानते, तो यह बतलाओ ! तुम्हें किस ने पैदा किया ? यदि तुम कहते हो कि हम स्वयं ही माता पिता के संयोग से उत्पन्न हो गये हैं, तो तुम्हारे माता पिता को और फिर उनके माता पिता को किसने पैदा

किया था ? अन्ततोगत्वा यही सिद्ध होगा कि सबसे पहला जोड़ा खुदा ने ही उत्पन्न किया था, कि जिस से यह मनुष्य उत्पत्ति का प्रवाह (सिलसिला) चल निकला, अच्छा ! यदि यह मान भी लिया जाय कि पैदा तुम स्वयं ही हो गये होगे, तो फिर यह बताओ, कि तुम मरते क्यों हो ? क्या मर भी स्वयं ही जाते हो ? नहीं, बहुत से मनुष्य मरना नहीं चाहते किन्तु वे मरते हैं । देखो, एक समय में तुम मृतक समान थे, फिर खुदा ने तुम्हें जीवन प्रदान किया, तुम अब भी मरोगे किन्तु वह तुम्हें पुनरपि जीवन देगा। यह 'आवागमन' का चक्र तो उस समय तक बना ही रहेगा, जब तक कि तुम उसकी ओर न लौटाए जाओगे, अर्थात् मुक्ति न पा लोगे ।

हो वल्लज़ी ख़लक़ ल कुम्मा फ़ील् अर्ज़ जमीअन् सुमस्तवा इलस्समाए फ़सव्वा हुन्न सब्अ़ समा बातिन् व होव बे कुल्ले शय इन् अ़लीम् (९)

भा० टी० ९-अल्लाह वही है जिस ने तुम्हारे लिये पृथ्वी के समस्त पदार्थों को रच कर तत्पश्चात् आकाश की ओर आरोहण किया, बस निर्माण किये सप्त आकाश, और वह सर्वज्ञ है ।

व्या०—इस आयत में भी नास्तिकों को समझाने के लिए एक और युक्ति दी गई है, वह यह कि संसार और सांसारिक पदार्थों का बनाने वाला कोई अवश्य है, क्योंकि इन को मनुष्य तो अल्पज्ञ होने के कारण बना ही नहीं सकता, बस इन सब का रचियता अल्लाह ही है, जिस ने पृथ्वी, सात आसमान और समस्त पदार्थ बनाए हैं। इस आयत में सृष्टि उत्पत्ति का मूल रूप से वर्णन है, इसकी व्याख्या जो अन्य इस्लामी ग्रन्थों में की गई हैं उस में से हम कुछ पाठकों के विज्ञतार्थ यहां उद्धृत कर देना उचित समझते हैं। इस विषय में अहले इस्लाम के दो मत हैं और पहला मत यह है कि 'जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी ने ह० मुहम्मद से सृष्टि—उत्पत्ति का हाल पूछा। आप ने उत्तर दिया कि प्रथम अल्लाह ने मेरा 'नूर' (चमत्कार) पैदा किया, पुनः वह १२००० वर्ष तक अल्लाह की उपासना करता रहा *। फिर अल्लाह ने उस को चार भागों में विभक्त कर के एक से 'अर्श' (खुदा का तख़्त) दूसरे से 'क़लम' (लेखनी) तीसरे से 'बहिश्त' (जन्नत) और

---

* इस पुस्तक में वर्षों की गणना करते समय पाठकों को यह ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि अल्लाह का एक दिन मनुष्यों के १००० वर्ष के समान होता है। (कुरान)

चौथे मे 'आलमे अर्वाह' (जीव मण्डल) उत्पन्न किया, फिर क़लम से कहा कि तू अर्श पर 'लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह' लिख, क़लम ने प्रश्न किया कि ऐ मेरे मौला तू तो एक है, यह तेरे साथ दूसरा नाम किस का है ? खुदा ने फरमाया मेरे 'बरगज़ीदः हबीब' (प्रतिष्ठित मित्र) का, यह सुन कर क़लम ऐसा भयभीत हुआ कि उस में शिगाफ़ हो गया *। तत्पश्चात् अर्श पर १८००० बुर्ज पैदा किये और प्रत्येक बुर्ज पर १८००० सतून (खम्भे) और हर सतून के ऊपर १००० कंगूरे, ऐसे कि एक कंगूरे का मध्यान्तर ७०० वर्ष का मार्ग है, बनाये, और फिर हरएक कंगूरे पर एक २ कन्दील ऐसा टांगा गया कि जिस में सात तबक़े ज़मीन के और सात तबक़े आस्मान के, और जो कुछ उन में है ऐसे समा जायें जैसे कि अंगूठी में नगीनः'। तत्पश्चात् चार फरिश्ते, मनुष्य, सिंह, गृद्ध, गाय की सूरतों के उत्पन्न किये, उन के पांव तहतुस्सरा (पाताल) में और मूढ़े अर्श के नीचे अर्थात् सातवें आस्मान के ऊपर थे और उन का एक क़दम ७०० वर्ष का मार्ग था । फिर अर्श के नीचे एक दानः 'मर्वारीद' (एक पत्थर का नाम)

* कहते हैं कि उसी दिन से क़लम में शिगाफ़ देना सुन्नत हुआ है ।
(हदीस)

का पैदा हुआ। उससे अल्लाह ने 'लोहे महफ़ूज़' (खुदाई हिसाब किताब लिखने की पट्टी) बनाई, लम्बाई उस की ७०० वर्ष का मार्ग और चौड़ाई ५०० वर्ष का मार्ग थी, उस के चारों ओर 'याक़ूत सुर्ख' जड़ा हुआ था। क़लम को आज्ञा हुई कि 'उक्तुब् अ़ला मा होव काइनून् इलायौमिल्क़यामते' अर्थात् लिख, जो कुछ 'क़यामत तक होने वाला है ¶। फिर उस जबरीद के दाने के लिये हुक्म हुआ कि 'सन्न' (फैल जा) वह भय से फैला तो उस का पानी हो गया, उस से ही कुर्सी बनाई गई। फिर कुर्सी के नीचे एक दाना याक़ूत का पैदा हुआ। खुदा ने उस से चार 'हवाएं' पैदा कीं, उन्होंने पानी को जोश देकर कफ़ पैदा कर दिया। फिर क़ुदरते इलाही से अग्नि उत्पन्न हो कर वहां गई, और उस से धुवां पैदा हुआ, खुदा ने उस के सात भाग किये, एक भाग से पानी का आस्मान, और दूसरे से तांबे का आस्मान, तीसरे से लोहे का आस्मान, चौथे से चांदी का, पांचवें से सोने का, छठे से जबरीद का, सातवें से याक़ूत सुर्ख का आस्मान पैदा किया, और एक आस्मान से दूसरे

¶ तफ़सीरए इत्तिक़ान् में लिखा है कि 'शुरू दुनिया से क़यामत तक जो कुछ हुआ है या होगा वह सब उस तख़्ती पर लिखा हुआ है, क़ुरान भी नाज़िल होने से पहले ही उस में पहाड़ के बराबर हर्फ़ों में दर्ज था, उसी से 'जब्राईल' याद कर के ह० मुहम्मद को बता जाता था।

आस्मान तक का मध्यान्तर ५०० वर्ष का मार्ग है। फिर उस पानी के कफ से ही पृथ्वी, तथा और सांसारिक वस्तुएं उत्पन्न हुईं। (संक्षिप्तार्थ क़सिसुल् अम्बिया बाब पैदायशए काएनात पृष्ठ ३ से ५ तक छापा नज़ामी प्रेस कानपुर सं० १३२२ हिजरी)।

दूसरा मत यह है कि 'प्रथम खुदा ने एक वृक्ष पैदा किया, उस की चार शाखें थीं, और उस का नाम 'शजरातुल्यक़ीन्' (विश्वसनीय वृक्ष) रक्खा गया, पुनः नूरे-मुहम्मद को सफ़ेद मोती के पर्दे में सृजा, उस की आकृति 'मोर' जैसी थी, फिर उस मोर को उस वृक्ष पर बिठलाया, उस ने वहां पर १०००० वर्ष तक उपासना की, फिर खुदा ने 'मिरातल्हया' (लज्जा-दर्पण) पैदा कर के उस मोर के सामने रक्खा। जब उस में उसने अपनी सूरत देखी, तो अपने को बहुत ख़ूबसूरत पाया, इस से वह शरमिन्दा हो गया और खुदा के लिये (शुक्रगुज़ारी के) पांच सिज्दे किये § फिर खुदा ने उस की ओर दृष्टि की, तो वह लज्जा के मारे पसीना, पसीना हो गया, बस खुदा ने उस के सिर के पसीने से फ़रिश्तों को, और चहरे के से अर्श, कुर्सी, लोह (तख़्ती), क़लम, सूरज, चांद, तारों को, और उसको जो कुछ कि

§ वही पांच सिज्दे, पांच नमाज़ों के रूप में अल्लाह ने मुसलमानों पर फ़र्ज कर दिये हैं। (हदीस)

आस्मानों में है, पैदा किया, और सीने के पसीने से नबी, पैगम्बर, आलिम (विद्वान्), शहीद, और नेक मर्दों को, और दोनों अब्रूओं (भौओं) के पसीने से मोमिन, मोमिनः अर्थात् मुसल्मान मर्दों व औरतों को, और दोनों कानों के पसीने से यहूद, नसारा, मजूस, और जो कि इन के समान हैं, उन की अर्वाह (जीवों) को, और दोनों पैर के पसीने से पूर्वीय तथा पश्चिमीय पृथ्वी और वह भी जो कुछ कि इन में विद्यमान हैं, पैदा किया (दफ़ाए .कुल् अख़बार बाब १ पृष्ठ १७२)

वइज़् क़ाल रब्बोक लिलमलाइ कते इन्नी जाए लुन् फ़िल अर्ज़ें ख़लीफ़ा क़ालू आ तज् अ़लो फ़िहा मँ युफ़से दो फ़ीहा व यस्फ़् कुद्दिमाआ व नह् नो नुसब्बेहो बे हम्देक व नुक़द्दसो लक़ क़ाल इन्नी अ़लमो मा ला त-अ़लेमून् (१)

भा० टी० १—और जब तेरे प्रभु ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं पृथ्वी पर एक प्रतिनिधि(ख़लीफ़ा) बनाना चाहता हूं, तो वे (फ़रिश्ते) बोले क्या तू ऐसे पुरुष को बनावेगा जो वहां (पृथ्वी) पर उपद्रव और रक्तपात करे, हम तो तेरी स्तुति करते, और तेरी ही पवित्रता

बखानते हैं। कहा (अल्लाह ने) मैं वह जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

व्या० — इस आयत में ह० आदम के पैदा होने का सङ्केतमात्र वर्णन है, यद्यपि यह गाथा पूर्णतया तो ७,१५ आदि सूरतों में आई है किन्तु इस से अगली आयतों को पाठकों के हृदयाङ्गम करने के लिये हमें उसका यहां पर ही वर्णन कर देना उचित है। कहते हैं कि जब खुदा ज़मीन, आस्मान बना चुका, तो उस ने एक दिन अपनी कौन्सिल में फ़रिश्तों के सन्मुख, ह० 'आदम' के उत्पन्न करने का प्रस्ताव उपस्थित किया, किन्तु फ़रिश्तों ने उस की ताईद (अनुमोदन) के बजाय 'तरदीद' ही शुरू कर दी। उन्हों ने कहा जब कि आपको किसी प्रकार की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप के प्रत्येक कार्य करने के लिये हम सर्वदा उद्यत हैं, फिर आप आदम के पैदा करने का विचार क्यों करते हैं? क्या आप पृथ्वी पर ऐसे मनुष्य को पैदा करना चाहते हैं जो कि वहां झगड़ा फ़साद कर के खून बहाऐगा? ¶ हमारी सम्मति में तो आप को आदम के ब-

---

¶ फ़रिश्ते 'आलिमुल्ग़ैब' तो थे ही नहीं, फिर न जाने उन्हे भविष्य में होने वाली घटना का ठीक २ परिज्ञान कैसे हो गया था। शायद उन्होंने किसी प्रकार 'लोह महफ़ूज़' को देख लिया होगा।

जाने की कोई आवश्यकता नहीं है, 'आयन्दा जैसी राय आली होवे'। फ़रिश्तों के प्रस्ताव स्वीकार न करने पर अल्लाह मियां कुछ रुष्ट से हो गये, और आपने उन सब को झिड़क कर कहा कि तुम क्या पेशीनगोई करते हो? मैं वे बातें जानता हूं जो कि तुम नहीं जानते और नहीं जान सकते। 'पस, आदम ज़रूर बिज़्ज़रूर पैदा किया जायगा'। इतना कह कर आप ने जिब्राईल फ़रिश्ते को हुक्म दिया कि, जाओ, पृथ्वी पर से एक मुट्ठी मिट्टी ले आओ, जिस से हम आदम को बनावें, जिब्राईल ने जा कर पृथ्वी से मुट्ठी भर मिट्टी मांगी, किन्तु उस नें साफ़ इन्कार कर दिया, कहा कि अल्लाह की क़सम आदम पैदा हो कर मेरे ऊपर 'खूं ख़राबा' करेगा इसलिये कदापि मैं मिट्टी न दूंगी, जाओ! तुम खुदा से यही कह देना। जिब्राईल यह सुन कर लौट आए और आ कर ज्यों का त्यों वृत्तान्त अल्लाह से कह सुनाया। पुनः अल्लाह ने 'मेकाईल' को भेजा किन्तु उन को भी सफलता प्राप्त न हुई, फिर अल्लाह ने 'इस्राफ़ील' को खब समझा बुझा कर भेजा, परन्तु इन को भी पृथ्वी ने वही उत्तर दे कर टरख़ा दिया, और ये ख़ाली हाथों जैसे गये थे वैसे ही आ खड़े हुए। तब तो अल्ला मियां को बहुत

क्रोध आया, कि देखो ! आज पृथ्वी कैसी सरकशी कर रही है? और यह फ़रिश्ते कैसे हैं जो एक मुट्ठी मिट्टी भी नहीं ला सकते ! यों कहो तो पृथ्वी ही सब कुछ हुई, हमारा हुक्म कुछ भी न हुआ ! है कोई जो कमबख़्त ज़मीन को ठीक करे !!! यह सुन कर ह० "इज़्राईल" उछल पड़े और आपने फ़रमाया अजी ! मैं अभी दम भर में जो कहिये सो कर सकता हूं, यह कह कर यह शीघ्र ही पृथ्वी के पास आए और कहा कि फ़ौरन् एक मुट्ठी मिट्टी हाज़िर करो। और फ़रिश्तों के लौट जाने से पृथ्वी कुछ मुंह लग गई थी, उसने इन्हें भी वही शुष्क उत्तर देकर टालना चाहा, किन्तु इन्होंने उसे बड़े ज़ोर की धमकी दी कि या तो चुप चाप मुट्ठी भर मिट्टी दे दे, नहीं तो तुझे कुल को ही उठा कर ले जाऊंगा, और फ़रिश्तों के घमण्ड में न रहना, मेरा नाम "इज़्राईल" है। मैं अपने रब की नाफ़रमानी कभी नहीं कर सकता। बस फिर क्या था पृथ्वी कांपने लगी और चुपचाप एक मुट्ठी मिट्टी उनके हवाले कर ही दी। यह खुशी २ कूदते फांदते उस को अल्लाह मियां के पास लाए, वह इन की इस कारगुज़ारी पर बहुत खुश हुए और इन को उसी के "सिले" (पारितोषिक) में "मलकुल्मोत" (जान निकालने वाला

फ़रिश्ता) का उहदा (पद) अता फ़रमाया। फिर वह मिट्टी जहां कि आजकल "मक्का" है वहां रक्खी गई, और उस पर अल्लाह ने ८ वर्ष तक वर्षा की तो, वह खनखनाती होगई। उस को खुदा ने अपने हाथ से गूंद कर * आदम † का पुतला बनाया, कुछ मिट्टी शेष रह गई तो उस से खुदा ने खजूर का वृक्ष उत्पन्न कर दिया। ‡ फिर वह पुतला ४० वर्ष तक पृथ्वी पर ही पड़ा रहा, फिर खुदा ने उस में जान डालने का हुक्म दिया तो उस की "रूह" को तबाक़ में रख कर, नूर से ढांका गया और उस "तबाक़" को ११००० फ़रिश्ते आदम के पास लाए, फिर 'रूह" के लिये कहा जाने लगा "उद्-खुल अय्यो हर्रूहो फ़ी अ जल्जसदे" अर्थात् ऐ रूह! तू, इस "शरीर' मे प्रविष्ट होजा। किन्तु "रूह" ने कहा कि हे अल्लाह! "मैं नूरानी जिस्म रखती हूं और यह शरीर 'ख़ाकी है' और इस में अन्धकार है। फिर इस मे, मैं कैसे दाखिल होऊं। खुदा ने कहा "उद्खुल् करहन्" अर्थात् नफरत से घुस जा, जब वह 'रूह' नाक

* एक हदीस में लिखा है कि 'ख़मर ता नान तो आदम बेयदी अर्बैन सुबाहन' अर्थात् अल्लाह ने अपने हाथों से ४० दिन तक मिट्टी गूंदी।

† यह नाम संस्कृत का आदिम शब्द प्रतीत होता है।

‡ एक हदीस में यह भी आया है कि 'खजूर, मुसलमानों की 'ख़ाला' (माता की बहिन) है।

के रास्ते से अन्दर पहुंची और लगभग २०० वर्ष के दिमाग़ में ही घूमती रही, वह शरीर में जिस २ स्थान पर आती रही वहां २ ही रगो रेशा, मांस और लोहू उत्पन्न होता गया, जब आधा शरीर ठीक होगया तो हज़रत ने आंखें खोल दीं और दोनों हाथ पृथ्वी पर टेक कर उठना चाहा किन्तु आप शीघ्र ही गिर पड़े इसीलिये खुदा ने कुरान में फरमाया है कि 'कनल् इन्सानो अजूलन्' अर्थात् इन्सान जल्दबाज़ है, फिर हज़रत को छींक आई तो अल्लाह ने उन पर "इल्हाम" किया कि तुम "अलहम्दो लिल्लाह" कहो, उन्होंने वैसा ही कहा तो खुदा ने 'यर्हमोकल्लाहो' कह कर उत्तर दिया* जिस समय यह प्राण-प्रतिष्ठा हो रही थी उस समय एक अपूर्व आनन्द आ रहा था और इस को देखने के लिये सातों आस्मान के फ़रिश्ते एकत्र हुए थे (क० अ० बा० पैदाइशए आदम पृष्ठ १०, ११)

व अ़ल्लम आदमल् अस्मा अ कुल्लहा सुम्म अ़रज़हुम् अ़लल्मलाईकते फ़क़ाल अम्बेऊनी बे अस्माए हाऊ लाए इन् कुन्तुम् सादेक़ीन् (२) कालू सुब्हानक ला ईल्म लना

---

* उसी समय से प्रत्येक मुसलमान पर छींक के पश्चात् अलहम्दोलिल्लाह, और सुनने वाले को उसका उत्तर 'यर्हमोकल्लाहो' कहना फ़र्ज़ है।

इल्ला मा अ़ल्लम्तना इन्नक अन्तल् अ़लीमु
ल्हकीम् (३) क़ाल या आदमो अम्बैहुम् बे
असमाईहिम् फ़ल्लम्मा अम्बाहुम् बेअस्माए
हिम् क़ाल आलम् अकुल्लकम् इन्नी आलमो
ग़ैबस्समावाते वल् अर्ज़ व आलमोमा तु-
ब्दू ने व मा कुन्तुम् तक्तोमून (४)

भा० टी० २ और उस ने आदम को सब वस्तुओं के नाम सिखलाए, फिर उन (वस्तुओं) को फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया, और कहा तुम मुझे इनके नाम बतलाओ, यदि तुम सच्चे हो । ३–वे बोले तू पवित्र है, हम उतना ही जानते हैं जितना कि तूने हमें सिखलाया, निश्चय तू बहुज्ञ तथा कार्यदक्ष है । ४–कहा अल्लाह ने हे आदम ! तू उन को इन (वस्तुओं) के नाम बतला फिर जब आदम ने उनको उनके नाम बता दिये तब (अल्लाह ने) फ़रमाया कि मैं ने कहा न था कि मैं आकाश, पृथ्वीकी छिपी हुई बातें जानता हूं, और (वे सब बातें भी) जो तुम प्रकट करते हो और जो तुम छिपाते हो मुझे ज्ञात हैं ।

व्या०—जब आदम की उत्पत्ति के प्रस्ताव को फ़रिश्तों ने यह कह कर अस्वीकार कर दिया था, कि

हम प्रत्येक कार्य्य उस से अच्छा कर सकते हैं, फिर उस के उत्पन्न करने की क्या आवश्यकता है? तो उस दिन से ही अल्ला मियां ने फ़रिश्तों को नीचा दिखलाने की मन में ठान ली थी, किन्तु सुअवसर की प्रतीक्षा थी, बस जब ह० आदम बनाए जा चुके तो अल्लाह ने भी अपनी मनोरथ सिद्धि के लिये एक उपाय ढूंढ़ निकाला। कहा जाता है कि संसार में जितनी भी वस्तुऐं हैं अल्लाह ने उन सब के नाम ह० आदम को फ़रिश्तों की चोरी २ रटा दिये, फिर वे सब वस्तुऐं फ़रिश्तों के सन्मुख उपस्थित कर के कहा, तुम ने जो कहा था कि हम प्रत्येक कार्य्य आदम से अच्छा कर सकते हैं, अच्छा! इन सब चीज़ों के नाम तो बताओ, यदि तुम अपने कथन में सच्चे हो तो। यह सुनते ही फ़रिश्तों के सन्नाटा निकल गया, क्योंकि उन बेचारों ने ये चीज़ें तो कभी बचपन में भी न देखी थीं, वे कानों पर हाथ रख कर बोले हे प्रभो! इन चीज़ों के नाम हम कैसे बतला सकते हैं? हम तो उतना ही जानते हैं जितना कि तू ने सिखलाया है, हां! तू सब वस्तुओं का ज्ञाता है। यह सुन कर अल्लाह मियां ने आदम से कहा कि तुम उन चीज़ों के नाम बतलाओ। इतना कहना ही था कि हज़रत ने चटपट, 'दवात, क़लम, काग़ज़, कि-

ताब, लोटा, थाली, तवा, तगारी, चूल्हा, चक्की, सिल, बट्टा, नमक, मिर्च, सौंफ, धनियां, कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा, गधादि के सब नाम सुना दिये, बस फिर क्या था, अब तो अल्लाह मियां की चढ़ बनी, आप ने फ़रमाया, मैंने पहले ही न कहा था ? कि मैं तुम से अधिक जानता हूं, भला ! तुम जो यह कहते थे कि हम प्रत्येक कार्य्य आदम से अच्छा कर सकते हैं, कहां किया ? कोई काम करना तो दूर रहा तुम तो वस्तुओं के नाम भी न बतला सके। किन्तु तुम से पीछे पैदा हुए आदम ने देखो कैसे खटाखट सुना दिये, कहो ! अब तो आदम तुम से श्रेष्ठ है।

व इज़ .कुल्ना लिल्मलाईकते स्जुदू ले आदम फ़सजदू इल्ला इब्लीस आबा वस्तक्बर व कान मिनल्काफ़िरीन् (५)

भा०टी०—५—और जब हम ने फरिश्तों से कहा कि तुम आदम को सिजदा (सिर झुकाना, जैसी कि नमाज़ में सिर पृथ्वी पर रखते हैं) करो, तो सब ने सिवाय इब्लीस के सिजदा किया, उसने (हुक्म) न माना, गर्व किया, और वह काफ़िरों में से था।

व्या०—इस आयत में 'शयतान' का वर्णन है, वास्तव में शयतान की गाथा बड़ी ही विचित्र है—और

इस से तमाम अहादीस और तफ़ासीर भरी पड़ी हैं किन्तु हम उन सब का खुलासा ही लिखते हैं। कहते हैं कि खुदा ने दोज़ख में दो सूरतें पैदा कीं। उन में एक शेर की थी और दूसरी गिद्ध की, जब उन दोनों ने आपस में संभोग किया तो एक फ़रिश्ता पैदा हुआ, खुदा ने उस का नाम 'अज़ाज़ील' रक्खा, उस ने वहां पर १००० वर्ष तक अल्लाह को सिजदा किया, फिर प्रत्येक ज़मीन पर सहस्र २ वर्ष सिजदा करते हुए सब से ऊपर की ज़मीन पर आया ‡ तो खुदा ने उस को दो 'बाज़ू' (पंख) सब्ज़ "ज़बरजद" (पत्थर) के दिये, जिन से उड़ कर वह पहले आस्मान पर पहुँचा और वहां जाकर उसने १००० वर्ष तक सिजदा किया तो खुदा ने उस को 'ख़ाशअ़' (डरनेवाला) की डिग्री (उपाधी) दी, फिर उसने दूसरे आस्मान पर जाकर १००० वर्ष तक सिजदा किया तब खुदा ने उस को 'आबिद' (इबादत करने वाला) की डिग्री प्रदान की। इसी प्रकार उसने सब हज़ार २ वर्ष सिजदा कर के 'सालह' 'वली' आदि की उपाधियां प्राप्त कीं; फिर उसने 'अर्श' पर

‡ "राज़ेतुल् अस्फ़िया" पृष्ठ ५ छापा लखनऊ सन् १३२६ हिज़्री में लिखा है कि 'कोहे क़ाफ़' (पहाड़ का नाम) के उस पार ७ ज़मीनें मुश्क की और ७ काफ़ूर की और सात चांदी की हैं।

पहुँच कर ६००० वर्ष तक सिजदा किया, आकाश और पृथ्वी पर कोई बाल बराबर भी ऐसी जगह न रही जिस पर उस ने सिजदा न किया हो, कहते हैं कि उसे इस कार्य्य के करने में पूरे ६००००० वर्ष व्यतीत करने पड़े, तत्पश्चात् उस ने खुदा से प्रार्थना की मुझे "लोहे महफूज़" देखने की आज्ञा दी जाए, खुदा ने इसे स्वीकार कर लिया और 'इस्राफील' को उस के साथ दिखलाने के लिए भेज दिया, वहां जाकर उस ने उस में यह लिखा पाया कि एक खुदा का बन्दा ६०००६० वर्ष तक तो सिजदा करेगा किन्तु एक सिजदा न करने के कारण वह "इबलीस" (शयतान) बना दिया जायगा, यह पढ़ कर 'अज़ाज़ील' को बड़ा दुःख हुआ और वह ६७००० वर्ष तक रोता फिरा, जब उसे कुछ भूला तो जन्नत में एक "नूर" की "मेज़" रख के उस ने फ़रिश्तों को शिक्षा देने का कार्य्य आरम्भ कर दिया, जब १००० वर्ष तक वह इस कार्य्य को बड़े ही परिश्रम से करता रहा तो खुदा ने खुश होकर आप को जन्नत के कोषाध्यक्ष पद पर नियुक्त कर दिया, अभी आप को इस 'पद' पर नियुक्त हुए कुछ हज़ार वर्ष ही गुज़रे थे कि अकस्मात् खुदा को सूचना मिली कि पृथ्वी पर रहने वाले 'जिनों' (योनि विशेष) ने बलवा कर दिया है,

तब आप को ४००० फ़रिश्तों का सेनापति बना कर प्रबन्ध के लिये 'स्पेशल ड्यूटी' पर जाना पड़ा, आपने वहां पहुँच कर अपनी बुद्धिमत्ता से ऐसा प्रबन्ध किया कि पृथ्वी पर शीघ्र ही शान्ति स्थापित हो गई, आप की इस कार्य्यदक्षता से खुदा बहुत ही प्रसन्न हुआ, और इस के बदले में आपको कुछ विशेष अधिकार भी मिले, कहते हैं कि जब आदम का 'पुतला' बना पड़ा था तो आप एक दिन बहुत से फ़रिश्तों के साथ पर्यटन (सैर) करते हुए उस के पास आ निकले, और उस पुतले को देख कर विस्मित होगये, कि यह क्या है? साथ के फ़रिश्तों ने कहा कि यह खुदा ने बनाया है। आप ने फ़रमाया क्यों? इस प्रश्न का उत्तर फ़रिश्ते सन्तोष-जनक न दे सके तो, ह० आदम के मुँह में घुस कर उन के पेट में पहुंच गये, वहां आप को गर्मी मालूम होने लगी तो आप शीघ्र बाहर निकल आए, और यह कह कर कि 'अगर मैं इस पर ग़ालिब हुआ तो इसे बर्बाद ही कर के छोड़ूंगा और अगर यह मुझ पर ग़ालिब (प्रधान) हुआ तो मैं उस की नाफ़र्मानी (आज्ञा उल्लंघन) करूंगा' उस पुतले पर थूक कर चले गये, जब यह वृत्तान्त खुदा को ज्ञात हुआ तो वह कुछ रुष्ट हुआ और जिब्राईल को हुक्म दिया कि हमारे पुतले को

साफ़ कर आओ, जिब्राईल वहां आए और उन्हों ने उस लगे हुए थूक को साफ़ कर के उसी का एक कुत्ता बना दिया *। जब फ़रिश्तों की आदम के मुक़ाबिले पर सब चीज़ों के नाम बतलाने में परीक्षा हो रही थी तो आप ह० अज़ाज़ील भी उस में सम्मिलित थे और अन्य फ़रिश्तों की भांति आप भी उन के नाम न बता जाने के कारण फ़ेल हो गये थे, बस! जब सब फ़रिश्ते फ़ेल हो चुके तो अल्लाह ने प्रस्ताव का विरोध करने और आदम के ऊपर थूक देने का बदला लेने का अच्छा अवसर समझा! आप ने सब को एक दम हुक्म दे दिया कि आदम को सिजदा करो!!! और फ़रिश्तों ने तो हक की न धक, हुक्म के सुनते ही फौरन सिजदे में गिर पड़े, किन्तु शयतान बहादुर अपनी जगह ही अकड़े खड़े रहे।

अल्लाह—+ तुम ने सिजदा क्यों नहीं किया?

---

* चूंकि 'कुत्ते' की उत्पत्ति थूक से है इसी कारण से मुसलमान लोग उसकी 'परछाईं' से भी अशुद्धता मानते हैं॥

+ "क़ाल मा मन अक अल्ला तस्जुदइज़् अमरतोक" कु० सू० ७ रु० २ आ० २।

अज़ाज़ील—हुजूर ने ही हुक्म दे रक्खा है कि मेरे सिवाय और किसी को सिजदा न करना। +

अल्लाह—मैं अब हुक्म देता हूं कि आदम को सिजदा करो।

अज़ाज़ील—आप अपना पहला हुक्म क्यों मंसूख़ करते हैं?

अल्लाह—मेरी मर्ज़ी।

अज़ाज़ील—आख़िर, आप की ऐसी मर्ज़ी क्यों?

अल्लाह—मैं इस को बतलाने के लिये तैयार नहीं।

अज़ाज़ील—तो, जब तक आप कोई ख़ास वजह न बतलाएं मैं हर्गिज़ मर्दुमपरस्ती के लिये तैयार नहीं *।

अल्लाह—तो, नाफ़रमानी करोगे?

अज़ाज़ील—अगर आप की 'इस्तेलाह' में इसी को नाफ़रमानी कहते हैं तो ऐसा ही समझिये।

अल्लाह—आदम तुझ से बुज़ुर्ग है।

+ "ला तस्जुदू लिश्शमसे व ला क़मर वस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी ख़लक़ हुन्न इन्कुन्तुम् इय्या हो त अबेदून्" कु० सू० २ रु० ५ आ० ५।

* क्योंकि 'इन्नलाह ला या मुरो बिल्फ़ो हशाए' अर्थात् अल्लाह बेजा काम की आज्ञा नहीं देता। कु सू ७ रु ३ आ २॥

अज़ाज़ील–किस 'लिहाज़' से ? अगर उम्र की निस्बत कहते हो तो मैं उस से कहीं बड़ा हूं।

अल्लाह–नहीं, जिस्म के लिहाज़ से।

अज़ाज़ील–अच्छा तो, आप मेरा और इस का मुक़ाबिला ही करा दीजिये।

अल्लाह–देख ! इस को मैं ने अपने दोनों हाथों से बनाया §।

अज़ाज़ील–सुनिये ! मुझे आप ने अपनी कुदरत से पैदा किया और बनावटी चीज़ से कुदरती चीज़ हमेशा अच्छी होती है।

अल्लाह–यह इबादत ज्यादा करेगा।

अज़ाज़ील–यह तो जब करेगा तब करेगा मैं तो ६ लाख साल तक कर चुका हूं, इतनी तो शायद इस की उम्र भी न होगी।

अल्लाह–यह तुम से 'इल्म' में ज्यादा है, देखो ! जिन चीज़ों के नाम तुम नहीं बतला सके थे वे इसने बतलाये।

अज़ाज़ील–वे तो आप ने रटा दिये थे, आप मुझे रटा कर चाहे जो कुछ सुन लें ?

---

§ 'क़ाल या इब्लीसो मा मनअक अन्तस्जुद लिमा ख़लक़्तो बेयदी' कु० सू० ३८ रु० ५ आ० १०॥

अल्लाह—बस तुम ज़्यादा हुज्जत मत करो। जो कुछ मैं कहता हूं उसे मान लो।

अज़ाज़ील—आप क्या कहते हैं?

अल्लाह—मैं यही कहता हूं कि आदम तुम से अफ़ज़ल है।

अज़ाज़ील—वाह जनाब! आप क्या फ़रमाते हैं? कहां फरिश्ता और कहां सड़ी मिट्टी से बना हुआ * इन्सान।

अल्लाह—बस, चुप रहो! तुम बड़े पाजी हो।

अज़ाज़ील—आप तो नाहक़ गालियां देते हैं, भला इसमें कौन पाजीपन की बात है?

अल्लाह—यह पाजीपन नहीं कि मैं तो सिजदा करने को कह रहा हूं, और तू सिजदा न कर के फ़िज़ूल की बकबक कर रहा है।

अज़ाज़ील—हज़ूर आप तो बिला वजह ख़फ़ा होते हैं, आप ही ने तो मुझे 'ला इलाह इल्लल्लाह' सिखा कर कहा था कि जान पर खेल जाना म-

---

* 'व लक़द् ख़लक़नल् इन्सान मिन्सलसा लिन्मिन्हम इम्मस्नून' (अर्थात्) और निश्चय, हम (अल्लाह) ने पैदा किया आदम को, काले और सड़े हुए गारे से जो सूख कर खन २ बजता था

क़ु० सू० १५ रु० ३ आ० १

गर इस कल्मे से मुँह न मोड़ना, फिर मैं आप की मामूली धमकी से कैसे आदम को सिजदा करके मुशरिक बनूं ? क्या आप मुझे आज़मा रहे हैं ?

अल्लाह--देख, ओ मर्दूद ! अब तू हद से बढ़ा जाता है, ख़ामख़ा बातें बना बना कर मुल्हिदों (नास्तिकों) जैसा मन्तिक़ बघार रहा है, अब तू मुझे सिर्फ़ दो लफ़्ज़ों में यह बतला, कि तू मेरे हुक्म की तामील करेगा या नहीं ?

अज़ाज़ील—हज़ूर आप कैसी बातें करते हैं ; भला यह किस के हुक्म की तामील कर रहा हूं। मेरी निगाह में आपके हुक्म की बहुत ज़्यादा वक़अत है। आप इतमीनान रखिये मैं आप की आज़माइश में कभी फ़ेल होने वाला नहीं, आप तो दो लफ़्ज़ोंमें जवाब मांगते हैं। मैं एकही लफ़्ज़में देता हूं कि जब तक मेरे दम में दम है मैं हर्गिज़ भी सिवाय आपके किसी और को सिजदा न करूंगा। 'अल्लाह' बस, बस, तू इबलीस (नाफ़रमानी करने वाला) है, फ़ौरन मेरे दर्बार में से निकल जा※।

※ 'क़ालफ़ाख़रुजिमन्हाफ़ इन्नक रजीम् व्इन्न अलय् कल्ल

अज़ाज़ील–मैं ने आज तक कोई आपका हुक्म टाला ? जो आप मुझे इबलीस कह रहे हैं ? आप तो सचमुच हो बिगड़ गये, मैं तो अब तक यही समझता था कि आप मेरा इम्तिहान ले रहे हैं और मेरे पास हो जाने पर मुझे कोई डिग्री अता फ़रमावेंगे।

अल्लाह–चुपचाप, यहां से चले जाओ। अब हम कुछ सुनना नहीं चाहते बस आज से तेरा नाम शयतान है।

शयतान–(गिड़गिड़ा कर) हज़ूर अगर आप इन्साफ़ फ़रमावें तो में हक़ पर हूं। मैंने ६ लाख साल तक आप की जो इबादत की है, आदम को सिजदा करके उसे कैसे ज़ाए कर दूं ! मैं चाहता हूं कि मेरे साथ इन्साफ हो।

अल्लाह–हमें जो कुछ हुक्म देना था सो दे चुके, अब उस पर नज़रसानी हरगिज़ नहीं हो सकती। तुम्हारा इसरार (दुराग्रह) बिल्कुल फ़िज़ूल है।

शयतान–तो बस यही इन्साफ है ?

अल्लाह–हां बस यही इन्साफ है, बस, अब बहुत हो

अनत इला योमिद्दीन, कहा (अल्लाह ने) बस तू यहां से निकल जा,' बेशक तू मर्दूद है, और तुझ पर क़यामत तक लआनत है कु० सू० १५ रु३ आ०६

चुकी, मैं हद से ज्यादा बर्दाश्त कर चुका हूं । अगर तू अपनी ख़ैर चाहता है तो इसी वक्त यहां से अपना मुँह काला करजा ।

शयतान—(बिगड़ कर) वरनः आप क्या कर लेंगे ?

अल्लाह—मैं सब कुछ कर सकता हूं, तू जानता है कि मैं क़ादिरे मुतलक़ (सर्वशक्तिमान्) हूं ?

शयतान—आप कुछ नहीं कर सकते, ये सब आपकी कोरी डींगें ही डींगें हैं।

अल्लाह—अबे ख़बीस ! डींगें नहीं हैं, जो तू कहे मैं वही करके दिखला सकता हूं ।

शयतान—देखो ! कहीं लौट न जाना ।

अल्लाह—कभी नहीं, कह, क्या कहना है ?

शयतान—और तो आप क्या करेंगे, मैं सिजदा नहीं करता हूं, ज़रा मुझ से सिजदा ही करा दीजिये !!

अल्लाह—(बड़े क्रोध से) मैं तो पहले ही जानता था कि तू ऐसी शरारत का पुतला है कि मेरी आज्ञा को न मानेगा ।

शयतान—जी हां सच है, अगर आप ऐसा ही जानते थे तो फिर मुझे सिजदा करने का हुक्म ही क्यों दिया था ? क्या बक़ौल 'आज़मूदःरा आज़मूदन जेहलस्त'' इस से आपकी अक़लमन्दी साबित नहीं होती ?

अल्लाह-बस लअ़नत् है तेरे ऊपर जो तू अब यहां एक सेकण्ड भी ठहरे, तू गुमराह होगया है, मैं तुझे दोज़ख में डालूंगा।

शैतान-यहां आपका मकान है चाहे जितनी गालियां दे लीजिये मैं ज़रूर ही मदाख़िलत बेजा के जुर्म के ख़ौफ़ से नहीं बोल सकता हूं। हां इतना कहता हूं कि तूने मुझे गुमराह किया है * सो मैं भी हमेशा तेरे बन्दों को गुमराह करता रहूंगा

अल्लाह-शौक़ से गुमराह करना, जो बन्दे तेरी पैरवी करेंगे मैं क़समिया कहता हूं कि उन सब से दोज़ख़ भरूंगा।

शैतान-(वहां से चलता हुआ) और तो आप कुछ कर ही नहीं सकते। बस आपकी यही आख़िरी धौंस है सो देखा जाएगा। अच्छा तो! 'सलाम् अलयकुम'

---

* 'क़ाल फ़बेमा अग्वे तेनी लअक़ुदन्न लहुम्सि-रातकल्मुस्तक़ीम्' कु० सू० २ रु २ आ० ४

* 'वहक़्क़ अहक़्क़म लमोऊदोहिम् अजमईन्' कु० सू० १५० रु० ३ आ० १८

व .कुलना या आदमुस्कुन् अन्त व ज़ौजोकल्लन्नतः व कुला मिन्हा रग़दन्हय्.सो शेतुमा व ला त.क् रबा हाज़े हिश्शोजरतः फ़तकूना मिनज्ज़ाले मीन् (६)

भा० टी० ६—और हमने आदम से कहा कि तू और तेरी स्त्री जन्नत में बसो, और तुम दोनों उसमें जहां कहीं से चाहो यथेष्ट खाओ, परन्तु इस वृक्ष के पास मत फटकना कि (ऐसा करने से) तुम अत्याचारी हो जाओ।

व्या—जब परीक्षा समाप्त हो चुकी और अज़ाज़ील शयतान बना कर वहां से निकाला जा चुका, तो अल्लाह ने, आदम और उनकी स्त्री 'हव्वा' को आज्ञा दी कि तुम जन्नत में निवास करो और उसमें से जो कुछ तुम्हें पसन्द आए खाओ किन्तु इस एक वृक्ष के समीप कदापि न जाना, नहीं तो तुम अन्यायी हो जाओगे। वह वृक्ष किस चीज़ का था, इस विषय में इस्लामी विद्वानों का बहुत मतभेद है, कुछ एक तो यह कहते हैं कि वह 'गेंहू' का था, कुछ कहते हैं कि वह अंगूर, लोंग, काफूर, अथवा खजूर का था किन्तु 'मआलम्' की हदीस में लिखा है कि वह 'शजरतुलइल्म' (विद्या

का वृक्ष) था, ऐसा ही 'तौरेत, किताब पैदायश बाब २ आयत १६ १७ में लिखा है कि 'और खुदावन्द खुदा ने आदम को जन्नत में रहने का हुक्म दे कर कहा कि तू बाग़ के हर दरख़्त का फल खाया कर लेकिन नेकोबद: की पहिचान के दरख़्त से न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसे खाएगा, तू ज़रूर मरेगा। यहां यह बतला देना भी आवश्यक है कि सामान्यतया मुसलमानों और ईसाइयां का यह विश्वास है कि ह० आदम के जन्नत में दाख़िल हो जाने के पश्चात् 'हवा उत्पन्न की गई जैसा लिखा है 'और जब आदम अलहुस्सलाम बहिश्तमें दाख़िल हुए तो अपने एक उनीस (प्रेमी) को चाहा, ताकि उससे उन्स (प्रेम) करे और हक़तआला के ज़िक्र में जी लगे, और सनअते इलाही (ईश्वरीय रचना) का मुशाहिदा (निरीक्षण) करे, हक़तआला ने उन को नींद में डाला और उसी ख़्वाब में (उनकी) बाईं पसली की हड्डी से हव्वा को पैदा किया और उनको 'हव्वा' इसी वजह से कहते हैं कि वह "हय्यन" (अर्थात् ज़िन्दे मर्द) से पैदा की गई है। (सिनाहीजुलल्नबूवत भाग २ पृष्ठ ६ पंक्ति १६ छापा चौथी बार कानपुर सन् १८९३ ईसवी) फिर लिखा है कि "और (आदम के जन्नत में प्रवेश करने के पश्चात्)

खुदावन्द खुदा ने कहा कि अच्छा नहीं कि आदम अकेला रहे, मैं उसके लिये एक साथी उसके मानिन्द बनाऊंगा और खुदावन्द खुदा ने आदम पर भारी नींद भेजी कि वह सो गया और उसने उसकी पसलियों में से एक पसली निकाली † और उसके बदले गोश्त भर दिया और खुदावन्द खुदा उस पसली से जो उसने आदम से निकाली थी एक औरत बना के आदम के पास लाया और आदम ने कहा कि अब यह मेरी हड्डियों में से हड्डी, और मेरे गोश्त में से गोश्त है इस सबब से यह नारी कहलाएगी क्योंकि यह नर से निकाली गई है (तौरेत, किताब पैदायश बाब २ आयत १८, २१—२२) किन्तु क़ुरान की इस आयत से यह साबित होता है कि वह ह० आदम के जन्नत में प्रविष्ट होने के पूर्व ही उत्पन्न हो चुकी थी। निस्सन्देह, यह विचारणीय विषय है।

फ़ अज़ल्ल हुमश्शयतानो अन्हा फ़ अख़्रज हुमा मिम्मा काना फ़ीहे व कुक़ीलनहबेतू बअ़ ज़ो कूम् ले बअ़ज़िन् अदुव्वुन्

---

† कहा जाता है कि इसी कारण से मर्दों की स्त्रियों से एक पसली कम होती है।

व लकुम् फ़िल् अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव्व मताउन् इलाहीन् (७)

भा० टी० ७—पश्चात् शयतान ने उन दोनों को उससे डिगाया और जिस में वे थे वहां से निकाल दिया, † हम (अल्लाह) ने कहा तुम सब नीचे उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो, तुम्हारे लिये जीवन पर्यन्त पृथ्वी पर ही ठिकाना, और उपभोग है।

व्या०—कहते हैं कि जब शयतान खुदा के दर्बार से निकाल दिया गया तो उसकी आंखें उसकी छाती पर आ गईं और वह मन ही मन में कोई उपाय सोचने लगा कि जिस से ह० आदम को जन्नत से निकलवा दिया जाय। सोचते सोचते जब उसे यह मालूम हुआ कि आदम को एक वृक्ष के खाने से रोक दिया गया है, तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने निश्चय कर लिया कि अब मुझे वहां शीघ्र पहुंच कर छापा मारना चाहिये। और वह इसमे आज़म (महा-मन्त्र) के ज़रिये से आनन फ़ानन में जन्नत के फाटक पर पहुंचा और दहाड़ें मार २ कर रोने लगा, उसका

† कतिपय भाष्यकार (अल्लाह से) निकलवा दिया" ऐसा भी अर्थ करते हैं किन्तु वह व्याकरणानुसार सर्वथा अशुद्ध है।

रोना मोर ने सुन लिया और वह यह समझ कर कि किसी फ़रिश्ते पर आपत्ति आ पड़ी है, सहायता करनी चाहिये वह उसके पास दौड़ा हुआ आया और उसके रोने का कारण पूछने लगा। शयतान ने कहा कि भाई मैंने सुना है कि जन्नत बड़ी क़ाबिलदीद जगह है इसलिए मेरा मन उसके देखने को चाहता है, यदि किसी भांति आप मुझे वहां की सैर करार दें तो मैं आप का बड़ा कृतज्ञ हूंगा और आप को 'इस्मे आज़म' भी सिखला दूंगा। मोर ने उत्तर दिया कि आप घबराइये नहीं, आज कल जन्नत के फाटक का दर्बानी सांप है, और वह मेरा बड़ा मित्र है, मैं अवश्यमेव आप को जन्नत देखने का प्रबन्ध कर दूंगा। यह कह कर और उसे अपने साथ लेकर वह सीधा जन्नत के फाटक पर आया और सांप से कहा कि यह मेरे मित्र हैं आप कृपा करके इन्हें जन्नत दिखला दीजिये। सांप ने कहा कि जन्नत के फाटक में तो किसी को पांव रखने की आज्ञा नहीं है अतः मैं आप की आज्ञा—पालन करने में विवश हूं। यह सुन कर शयतान बोल उठा यदि आप मुझे सन्मानित करना चाहते हैं तो मैं आप को ऐसी तरकीब बतला सकता हूं कि जिससे आप पर किसी प्रकार का अपराध न लगाया जा सके और काम भी हो जाय—वह यह कि मैं आप के

मुँह में बैठ कर फाटक को उल्लंघन कर जाऊँगा। आप के क़सम खाने को जगह रह जायगी कि मैं ने सिवाय अपने किसी और को फाटक में क़दम भी नहीं रखने दिया है। सांप की समझ में यह बात आ गई, बस शयतान उसके मुँह में बैठ कर दरवाजे के पार हो गया, सांप तो पुनः अपनी ड्यूटी पर आ गया और शयतान घूमता घामता आदम और हव्वा के पास पहुंच गया और उन से कुछ इधर उधर की बातें कर के पूछ बैठा कि तुम अमुक वृक्ष का फल क्यों नहीं खाते हो? उन्हों ने उत्तर दिया कि हमारे प्रभु ने मना कर रक्खा है, तब शयतान ने बड़े विस्मय के साथ कहा कि अल्लाह ने मना कर रक्खा है ? उन्हों ने उत्तर दिया कि हां । फिर शयतान बोला यदि तुम इस वृक्ष के फल को खालो तो निस्सन्देह फ़रिश्तों की भांति सदैव के लिये अमर हो जाओ। उन्हें इस बात का विश्वास न आया अतः उन्हों ने उत्तर दिया कि हम अपने रब की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते, तब शयतान ने खुदा की क़सम खा कर कहा कि मैं सच कहता हूं कि तुम फल के खाने से ज़रूर ही मृत्यु के भय से बच जाओगे, और खुदा को तुम्हारी यह बात भी मालूम न होगी !! क़सम के खाने पर तो उन्हें विश्वास आ गया क्योंकि उस समय

कोई भी झूंठी क़सम न खाता था, शयतान के चक़मा देने पर उन्हों ने शीघ्र उस फल को तोड़ कर खा लिया बस फिर क्या था। शयतान मारे हँसी के लोट पोट हो गया और यह कहता हुआ फाटक से बाहर हो गया कि मैं ने आदम के गुमराह करने की जो प्रतिज्ञा की थी मैं उस में सफल हो गया। अब सर्वदा ऐसे ही औरों को भी गुमराह किया करूंगा क्योंकि जब मेरा छापा अल्ला मियां की जन्नत में ही लग गया तो फिर दुनिया का तो कहना ही क्या है? उधर फल खाते ही आदम और हव्वा की आंखें खुल गई, और उन्हें मालूम होने लगा कि हम बिलकुल नंगे हैं और यह उचित नहीं है। अतः वे अपना आगा पीछा ढाकने के लिये अंजीर आदि वृक्षों के पत्ते तोड़ने दौड़े किन्तु उन के बाल ऐसे लम्बे थे जैसे कि खजूर के दरख़्त इसलिये वह वृक्षों में अटक गये। जब अल्लाह को यह समाचार मालूम हुआ तो उसने कहा तुम ने शयतान के बहकाने से मेरी नाफ़रमानी की अतः तुम गुनहगार हुए, बस अब तुम्हारा जन्नत में क्या काम? जाओ पृथ्वी पर तुम एक दूसरे के शत्रु बन कर रहो अर्थात् मोर सांप का और सांप मर्द औरतों का और मर्द औरत सांप के और शयतान सब

इस से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि वह वृक्ष विद्या या बुद्धि ही का था।

का, यह कह कर सब को ज़मीन पर पटक दिया। कहते हैं कि सांप पहले बहुत खूबसूरत था, उसके चार पांव ऊंट जैसे थे किन्तु उस को दण्ड देने के लिए वे छीन लिये गये ताकि पेट के बल चल कर वह महा दुःख उठाए। मोर के पांव भी बहुत खूबसूरत थे, किन्तु वह भद्दे कर दिये गये जिस से वह उन्हें देख देख कर कुढ़ा करे।

(त० आ० पृ० १४६, १४७ और क० अ० पृ० १५, १६)

फ़तलक़्क़ा आदमो मिर्रब्बेही कलेमातिन् फ़ताब अ़लयहे इन्नहु हो वत्तव्वाबुर्रहीम् (८)

भ० टी०—फिर आदम ने अपने प्रभु से कुछ वाक्य सीख लिए तब उस (अल्लाह) ने उनकी तोबा (प्रायश्चित) क़बूल करली, निस्सन्देह वह बड़ा क्षमा करने वाला और दयालु है।

कथा०—जब ह० आदम और हव्वा का जन्नत से पतन हुआ तो वे कोहे सर अन्दीप में आ पड़े और अपनी भूल पर बहुत ही लज्जित हुए, ४० दिन तक कुछ भी न खाया और वे २०० वर्ष तक तो बराबर चीख़ २ कर रोते ही रहे। उनकी आंखों के अश्रुओं से नहरें जारी हो गईं और उनके किनारे लौंग, जायफल, खजूर के

वंश उत्पन्न हो गये, उनका रोना सुन कर ही जिब्राईल आसमान से उतरे और उनके साथ मिल कर रोने लगे। जिब्राईल के रोने की आवाज़ और फ़रिश्तों ने सुनी, तो वे सब भी रोने लगे, अन्ततोगत्वा जिब्राईल खुदा के पास आए और उन का यथा तथ्य वृत्तान्त कह कर उनकी मआफ़ी की सिफ़ारिश की, तब खुदा ने यह वाक्य "रब्बना ज़लम्ना अन्फ़ोसना व इन्लमतग़ो फ़िर्लना व तर्हम्ना लनकू नन्न मिनलख़ा सेरीन्"† आदम के दिलमें डाले, तब आदम ने इनको सच्चे मन से कहा और ३०० वर्ष तक बिल्कुल सिर झुकाए खड़े रहे। तब खुदा ने उनको क्षमा करके उनकी तोबा स्वीकार करली।

कुल्नाबेह्तू मिन्हा जमीअन्फ़ाम्मेमा या तये न्नकुम्मिन्नी हुदन्फ़ मन्तबअ् हुदाय फ़ला ख़ौ फुन् अलय्हिम्व ला यह्ज़नून् (६) वल्लज़ीन कफ़रु बे आयातेना ऊलाईक अस्हा बुन्नारे हुम्फ़ीहा ख़ाले दून् (१०)

---

† (अर्थात्) हे प्रभो! हमने अपने जीवनों पर अन्याय किया और यदि तू हमें (अब) क्षमा न करके हम पर अपनी दया न करेगा तो हम निस्सन्देह हानि उठाने वाले होंगे।

भा० टी० ९—हमने कहा तुम सब यहां जन्नत से नीचे उतरो फिर अगर तुमको मेरी ओर से शिक्षा पहुंचे तो जो कोई उसका अनुकरण करे बस उन पर कुछ भय न होगा और न वे दुःख उठावेंगे।

१०—और जिन्होंने इन्कार किया और हमारे चिन्हों को झुटलाया, तो वे सब दोज़ख़ी हैं और सर्वदा उसी में रहेंगे।

व्या०—जब ह० आदम की तोबा स्वीकार हो चुकी तो ख़ुदा ने कहा कि तुम जन्नत से नीचे उतरो † और जब कभी कोई पैग़म्बर हमारी ओर से कोई इलहामी पुस्तक लाऐ तो तुम उस पर विश्वास लाना क्योंकि जो विश्वास लाऐगा उसके लिए दोज़ख़ का कुछ भी भय और दुःख न होगा और जो मानने से इन्कार करेंगे और हमारी पुस्तक या हमारे पैग़म्बरों को झुटलाऐंगे वे सब दोज़ख़ की आग में फेंक दिये जावेंगे। यह नहीं होगा कि उनके रोने चिल्लाने पर वह निकाल लिये जाएं, नहीं वे तो सदैव उसमें रहेंगे। कहते हैं कि

† सातवीं आयत से साबित होता है कि वे सब तोबा स्वीकार होने के पूर्व पृथ्वी पर पांचों उतर चुके थे पुनः उनके जन्नतमें जाने का कहीं से पता नहीं चलता। फिर ना मालूम उनके द्वितीय बार उतरने को क्यों लिखा गया? इस का अन्य भाष्यकार भी कुछ भी उत्तर नहीं देते।

इस बार ह० आदम हिन्द (भारतवर्ष)में उतरे, और उनके बदन पर कुछ जन्नत के वृक्षों के पत्ते लगे रह गये थे, बस जिस २ वृक्ष पर उन पत्तों की परछाईं पड़ी वे सब चन्दनादि के सुगन्धमय वृक्ष बन गये। अब हज़रत को पृथ्वी पर आकर खाने पकाने की फ़िक्र पड़ी तो जिब्राईल ७ टुकड़े लोहे और थोड़ी सी अग्नि दारोग़ा दोज़ख़ से मांग कर लाए ताकि ह० आदम को आहंगरी (लुहार का काम) सिखला दें किन्तु जब आं हज़रत ने सीखने के लिये अग्नि को हाथ में लिया तो उसकी उष्णता की अधिकता से उनका हाथ जल उठा अतएव उन्होंने उसको बड़ी शीघ्रता से भूमि पर पटक दिया, भूमि पर गिरते ही वह अग्नि स्वयमेव दोज़ख़ में पहुंच गई, जिब्राईल उसको फिर दोज़ख़ से लाए किन्तु फिर भी वैसा ही हुआ, संक्षिप्त यह कि सात बार अग्नि लाई गई किन्तु वह स्वस्थान पर ही आ उपस्थित हुई †। फिर जिब्राईल ने 'चक़माक़' से आग निकाल कर आं हज़रत को कृषि सम्बन्धी औज़ार बनाने

---

† शायद वह जब तक धोई न गई होगी क्योंकि हदीस में लिखा है कि जब दोज़ख़ की आग १००० वर्ष तक धोई गई तो वह सुर्ख़ हुई, पुन. १०० वर्ष धोने पर सफ़ेद, और फिर १०० वर्ष धोने पर स्याह हो कर तब कहीं ठण्डी पड़ी है (मिश्कात भाग ७ पृष्ठ १४२)।

सिखलाए और जन्नत से २ बैल और एक मुट्ठी गन्दुम (गेंहूं) ला दिये जिससे वे कृषि कर के अपना पेट भर सकें। आं हज़रत ने पृथ्वी जोतना आरम्भ किया तो बैलों ने चलने में कुछ इधर उधर की तो आपने झट एक २ लकड़ी उनके मार दी, बैलों ने कहा अगर तुझे अक्ल होती तो बहिश्त से ही क्यों निकाला जाता, इस पर आं हज़रत रुष्ट हो कर उन्हें छोड़ भागे किन्तु जिब्राईल ने आ कर उन्हें समझाया, और अल्लाह ने उसी दिन से बैलों की ज़ुबान पर मुहर कर दी, फिर आपने वे गेंहू पृथ्वी पर बखेर दिये, तो पृथ्वी ने सात घड़ी में उनको उगा और पका कर यह कहा कि मैं निर्बलता के कारण शिथिल हूं अन्यथा इस से भी शीघ्र पका कर तैयार कर देती, आप उन गेंहुओं को कच्चा ही खाना चाहते थे किन्तु जिब्राईल ने आकर रोटी पकाने की तरकीब बतलाई, और आप पर अल्लाह ने १३ वीं, १४ वीं, १५ वीं तारीख का रोज़ा (व्रत) फ़र्ज़ (अनिवार्य्य) कर दिया। फिर खुदा ने जिब्राईल से कहा कि तुम अपने पंख + आदम की कमर पर मल दो जिस

+ हदीसे मुस्लिम अहमदी प्रेस लाहोर के भाग १ पृष्ठ ३०२ पर लिखा है कि जिब्राईल फ़रिश्ते के ६०० पर (पंख) हैं और दो पंख तो ऐसे हैं कि एक पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा तक और दूसरा उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा तक बिल्कुल ढांप सकता है।

से सन्तान उत्पत्ति हो। जिब्राईल ने ऐसा ही किया तो बहुत सी सन्तान उत्पन्न हो गई।

या बनी इस्राईल ज्कुरु नेअमतिल्लती अन्अ.म्तो अ.लय्कुम् व ओफ़ू बे अह्दी ऊफ़े वे अह्द कुम् व इय्या य फ़र्हबून् (१) व आमिनू बिमा अन्ज़ल्तो मुसद्दे क़ल्लिमा मअ.कुम् व ला तकूनू अव्वल काफ़े रिन् बिही व ला तश्तरु बे आयाती समनन्क़लीलँ व्व इय्या य फ़त्त-कून् (२) व ला तल्बेसू ल्हक्क़ बिल्बातिलि न्व तक्तोमूल्हक्क़ व अन्तुम्तअ.लेमून् (३) व अक़ी मुस्सलात व आ तुज्ज़कात व र्कौ म .अर्राकेईन् (४)

भा० टी० १—हे ईस्राईल की सन्तानो! मेरे उस अनुग्रह को स्मरण करो जो कि मैं ने तुम पर किया और तुम मेरे साथ किये हुए प्रण को पूर्ण करो तो मैं तुम्हारे साथ किये हुए प्रण को निभाऊँगा। और मुझ से भय करते रहो। २—और जो कुछ मैं ने उतारा है, उस को स्वीकार कर लो (क्योंकि वह) जो कुछ तुम्हारे पास है उस को भी सच बतलाता है, और तुम (सब से)

पहिले ही उसे न अङ्गीकार करने वाले (अर्थात् मुन्किर) न बनो, और मेरी आयतों को थोड़े मूल्य के बदले न बेचो, और मुझ से डरते रहो। ३—और सत्य को असत्य के साथ गड़मड़ मत करो और न (जान बूझ कर) सत्य को छिपाओ और तुम जानते हो। ४—और नमाज़ पढ़ो, ज़कात * दो, और झुकने वालों के साथ झुको।

व्या०—इन आयतोंमें बनी इस्राईल का जिक्र है और बनी इस्राईल का पदच्छेद यों है बनी, इस्रा, इल्—बनी, यह अर्बी भाषा का शब्द, और 'इब्न' का कि जिस के मअ्ने पुत्र के हैं बहुवचन है। इस्रा और ईल ये इबरानी भाषा के शब्द हैं जिनके मअ्ने इस प्रकार हैं कि इस्रा बन्दा (सेवक) इल् अल्लाह अर्थात् अल्लाह के बन्दे की सन्तानें। इन का संक्षिप्त वृत्तान्त यों है कि ह० इब्राहीम 'की सारा' बीबी से ह० इस्हाक़ उत्पन्न हुए, और उनका निकाह ह० लूत की बहिन से हो कर उनके एक ही गर्भ से ह० याक़ूब और ह० एस, जोड़वां भाई (युग्म) पैदा हुए। जब ह० इस्हाक़ वृद्ध होकर चक्षुविहीन हो गये तो उन्होंने अपना सब माल

†ज़कात आय (आमदनी) के चालीसवें भाग की ख़ैरात (दान) को कहते हैं।

असबाब आधा २ दोनों पुत्रों में विभक्त कर दिया किन्तु आं हज़रत किसी कारण से ह० एस को अधिक चाहते थे इसलिये उन्होंने एस से कहा कि तुम अमुक समय पर मेरे पास आना, मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा। यह कथन उनकी स्त्री ने भी सुन लिया और चूंकि वह ह० याकूब से अधिक प्रेम रखती थी अतः उसने नियत समय के पूर्व ही ह० याकूब को आशीर्वाद लेने के लिए भेज दिया। आं हज़रत ने यह जान कर कि यह एस ही है (क्योंकि ह० याकूब ने ह० एस जैसी ही वाणी में कहा था कि मैं आशीर्वाद लेने के लिये उपस्थित हूं) यह कहा कि 'खुदा तआला तेरी औलाद में बर्कत दे और हमेशा उसी में नबूवत (पैग़म्बरी) जारी रक्खे' यह वरदान लेकर ह० याकूब लौटे ही थे कि इतने में ह० एस भी वहां पहुंच गये और उन्होंने कहा पिता जी मैं आप के नियत किये हुए समय पर आ गया हूं। कृपा करके मुझे आशीर्वाद दीजिये। यह सुन कर आं हज़रत ने बड़े विस्मय से पूछा कि क्या तुम्हें आशीर्वाद नहीं दिया गया? अभी २ तो तुम आए थे, और मैंने दुआ की थी। ह० एस ने कहा कि मैं नहीं आया था, जान पड़ता है कि आपको धोखा दिया गया। अन्ततोगत्वा अनुसन्धान करने पर पता चला कि ह० याकूब आ कर आशीर्वाद

ले गये, पुनः आं हज़रत ने ह० एस के लिये इस प्रकार दुआ की कि "खुदा तआ़ला तेरी औलाद में बड़े बड़े अज़ीमुलक़द्र बादशाह पैदा करे।"

ह० इस्हाक़ का स्वर्गधाम हो जाने पर ह० एसने ज़बरदस्ती से सब मालो असबाब क़ब्ज़ा कर लिया और ह० याक़ूब को एक फूटी कौड़ी तक भी न दी, इस पर उन की माता को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने ह० याक़ूब से कहा कि तुम मेरे भाई "लायां" के पास चले जाओ। वहां तुम्हें ख़र्च की भी तङ्गी न रहेगी और तुम्हारी शादी भी हो जायगी क्योंकि तुम्हारे मामूं के कई लड़कियां हैं आपने इस बात को स्वीकार कर लिया और अपने मामूँ लायां के पास पहुंच कर अपने आने का सब वृत्तान्त कह सुनाया। उन्होंने आपको बहुत कुछ दम दिलासा दे कर कहा कि तुम उस ओर कुछ भी ध्यान न दो, आनंद से यहीं रहो और मेरी बकरियां चराओ*। कहते हैं कि जब आप ७ साल बकरियां चरा चुके तो उन के मामूं ने अपनी बड़ी लड़की 'लया' से उनका निकाह कर दिया। तत्पश्चात् फिर सात

* मशारिक़ुल् अन्वार के पृष्ठ २४१ पर लिखा है कि 'अनू अग्री हुरेरः अनन्नबिय्ये क़ालमा बअस ल्लाहो

साल बकरियां चराने पर † उन का निकाह 'लायां' की बड़ी लड़की 'राहेल' से हो गया। यहां पर इस्लामी विद्वानों में मतभेद है। कुछ तो यों कहते हैं

नबिइयन् इल्ला रअल् ग़नम फ़क़ाल असहाबेहू व अन्त? फ़क़ाल न अम् कुन्तो अरआ अला क़रारीत ले अहले मक्कत' अर्थात् अबु हरेर से रवायत है कि ह० मुहम्मद ने फ़रमाया कि अल्लाह ने कोई नबी ऐसा नहीं भेजा कि जिस ने बकरियां न चराई हों। इस पर उन के सहाबियों ने कहा और आपने? तो हज़रत ने फ़रमाया हां! मैं भी चन्द क़ीरात (अरब के सिक्के का नाम है जो सोने के के ५ जौओं के बराबर होता है।) पर मक्के वालों की बकरियां चराता था।' यह क्यों? इस की वजह बयान की गई है कि बकरियों की गल्ले-बानी सरदारी सिखलाती है। चूंकि आगे उन्हें अपनी उम्मत को घेरना होता है इसलिये पहिले ही इन लोगों को ट्रेंड कर दिया जाता है।

† क़ससुल् अम्बिया के पृष्ठ ६५ पर लिखा है कि यह १४ वर्ष बकरियां चराना "मिहर" (मुसल्मानों में निकाह के समय ख़ाविन्द बीवी के हक़ में प्रतिज्ञा किया करता है कि अगर मैं बीवी को किसी कारण से छोड़ दूंगा तो इतना रुपया 'मिहर' का उसको दूंगा)। यह

कि लायां के चार लड़कियां थीं उन चारों ही का निकाह भी हज़रत के साथ हुआ † और उन्हीं से आप इस्लामी शरीअत की रू से कम से कम दस दिरहम अर्थात् २ रुपये दस आने का होना चाहिये। अधिक की कुछ मर्यादा नहीं है) के लिये था क्योंकि 'मिहर' का होना मुसलमानी निकाह में आवश्यक है क्योंकि यह ह० आदम पर भी मुआफ़ नहीं किया गया था। मनकूल है कि अगर समस्त संसार की ख़ूबसूरती १०० भागों में विभक्त कर ली जाय तो ह० हव्वा उस में से ९० हिस्से ख़ूबसूरत थीं। जब ह० आदम ने चाहा कि उन से समागम करें तो अल्लाह ने फ़रमाया कि जब तक तू निकाह पढ़ा कर मिहर न बान्ध लेगा तब तक तुझ पर ऐसा करना हराम (वर्जित) है। तत्पश्चात् ख़ुदा ने ख़ुद उन का निकाह पढ़ाया, अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते गवाह बने और 'मिहर' अदा करने के लिये उन के पास कुछ न था तो उन्होंने दस बार ह० मुहम्मद का दरूद पढ़ कर ही मिहर अदा किया। (क० अ० पृ० १२,१३)

† उस समय एक काल में दो बहिनों का एक साथ निकाह में ले आना जायज़ था किन्तु अब कु० सू० ४ रु० ४, की इस पहली आयत 'व अन्तज्मौ बेनल् उख़्ते ने इल्ला माक़द् सलफ़' से हराम है। "ओमा मलकत अयमनो हुम इन्नहुम गेयरा मलमीनते। अर्थात् टहलनियां हाथ का माल हैं, उन से भोग करना जायज है। कु० सू० २३ रु० १ आयत ६

के १२ पुत्र उत्पन्न हुए। कुछ यह कहते हैं कि केवल दो लड़कियों से ही निकाह हुआ और उनसे शमऊन, लावी, रूबन्, यहुदा, अस्खार, जबूलून, यूसुफ़ केवल ये ७ पुत्र ही उत्पन्न हुए, और दानू, तफ़र्ना, काद्, बशारा, नबिया ये ५ पुत्र २ या तीन टहलनियों से उत्पन्न हुए। अस्तु, जो कुछ भी हो, इन १२ पुत्रों से १२ बड़े २ क़बिले फैल गये और बहुधा अरब में इन्हीं की सन्तान पाई जाती है। इस आयत में इन्हीं को सम्बोधित करके कहा जाता है कि अगर तुम मेरे प्रण को पूरा करोगे तो मैं तुम्हारे प्रण को निभाऊंगा। इस प्रण के विषय में भी मत भेद है, कुछ तो यह कहते हैं कि यह वह प्रण है जो आदम को पृथ्वी पर उतारते समय अल्लाह ने करा और कराया था जिसका वर्णन चौथे रुकूअ की नवीं आयत में हो चुका है। किन्तु कुछ यह कहते हैं कि यह वह प्रण है

जो ख़ुदा ने तौरेत में किया था कि हम ह० मुहम्मद को एक किताब दे कर भेजेंगे, जो उन पर विश्वास लाएगा सीधा जन्नत में जाएगा। चाहे कोई भी प्रण हो किन्तु दोनों का अभिप्राय एक ही है और वह यह है कि यदि तुम ह० मुहम्मद और क़ुरान पर विश्वास ला कर अपने प्रण को पूरा करोगे तो मैं भी तुम्हें जन्नत में भेज कर अपने प्रण को निभाऊंगा। कहते हैं कि

यहूदी लोग न तो ज़कात देते थे और न अपनी नमाज़ में झुक कर सिजदा करते थे और कुरान पर विश्वास न लाकर उस का बड़े ज़ोर से खण्डन किया करते थे, उनकी तौरेत में जो यह आयतें कि मैं एक बज़ुर्ग पैग़म्बर को किताब दे कर भेजूंगा तो यहूदी कह देते कि इस आयत की पेशीन गोई के मुताबिक ह० ईसा आ चुके हैं अतः हम आप पर विश्वास नहीं लाते और कभी साफ़ इन्कार कर जाते कि हमारे कोई आयत ऐसी नहीं कि जिस से किसी पैग़म्बर का आना साबित हो इसलिये उन से कहा जाता है कि देखो ! तुम पैग़म्बरों की सन्तान और खुदा की इल्हामी पुस्तक (तौरेत) रखने वाले हो फिर अहले किताब हो कर सब से पहले तुम ही काफ़िर मत बन जाओ, यदि तुम्हारा यह विचार हो कि कुरान हमारी पुस्तक को झुटलाता है तो ऐसा कदापि नहीं प्रत्युत वह तो उस (तौरेत) को सच्चा बतलाता है, तुम थोड़े से सांसारिक लाभ के बदले में हमारी आयतों को मत बेचो और उस सत्य को कि जिसे तुम जानते हो मत छिपाओ और उस का झूंठा अर्थ करके संसार के थोड़े जीवन के बदले हमारी आयतों में गड़बड़ मत करो बस तुम हम से डरते हुए कुरान पर विश्वास लाओ, मुसलमनों की

तरह से ज़कात दो, और उन के साथ मिल कर नमाज़ पढ़ो ‡ और जैसे वे झुकें वैसे ही तुम भी झुको ।

आ ता मुरु न न्नास बिल्बिर्रे व त-न्सोन अन्फोसकुम्व अन्तुम्त त्लूनल्किताब आ फ़लातअ्. क़ेलून् (५)

भा०टी०—५—क्या तुम लोगों को शुभ कर्म करने की आज्ञा देते हो और अपने लिये उसे भुलाते हो? और तुम तो 'पुस्तक' पढ़ते हो ! क्या फिर भी नहीं समझते?

उया०—यहूदियों को उनके शिक्षक पक्षपात, असत्यादि त्यागने की शिक्षा दिया करते थे, इस आयत में उन से कहा जाता है कि जिस बात को तुम अच्छी समझ कर दूसरों के लिये उपदेश करते हो उसका स्वयं अनुष्ठान क्यों नहीं करते? अर्थात् रात दिन अपनी पुस्तक तौरेत में यह पढ़ कर भी कि आने वाले पैग़म्बर पर विश्वास करना चाहिये ह० मुहम्मद पर ईमान क्यों नहीं लाते?

वस्तईनू बिस्सबरे वस्सलाते व इन्नहा लकबीरतुन् इल्ला अलल्ख़ाशेईन (६) ल्लज़ीन-

‡ इस से जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना साबित होता है और उस सवाब (फल) अकेले नमाज़ पढ़ने से २७ गुणा अधिक होता है ।

त० आ० १० भा० पृ० १५६ ॥

यज़ुन्नून अन्नहुम्मु ल्लाक़ू रब्बेहिम्व अन्नहुम् इलय्हे राजेऊन्(७)

भा० टी०—६–तुम सन्तोष † और नमाज़ के साथ सहायता मांगो। निस्सन्देह यह बड़ी बात है किन्तु डरने वालों के लिये। ७–और जिन्हें यह विचार है कि उन्हें अपने प्रभु से मिलना है और उसी की तरफ़ लौटना है।

व्या०—कुछ लोग यह भी कह दिया करते थे कि अजी क्या करें? हम दिल से तो बहुत कुछ चाहते हैं कि खु-दाई अहकाम की पाबन्दी करें किन्तु निभा नहीं सकते। ऐसे ही लोगों के लिये कहा जाता है कि तुम शनै २ खुदा की बन्दगी सन्तोष के साथ किए जाओ, तुम एक दिन अवश्य सुधर जाओगे। और लोगों के लिए तो यह बात बड़ी छोटी सी मालूम होती है मगर हां जो खुदा से डरते हैं और जिन्हें यह पूर्ण विश्वास है कि एक दिन हम ज़रूर उससे मिलेंगे और वह हमारी इबादत से खुश होगा उनके लिये यही बहुत बड़ी बात है।

† कुछ भाष्यकार 'सब्र' के मअ्ने रोज़ा (व्रत) के भी करते हैं

या बनी इस्राईल. ज़्कुरु नेअ़्मतिल्लती अन्अ़म्तो अ़लय्कुम्व इन्नी फ़ज़्ज़ल्तो कुम् अ़लल्आ़लेमीन् (१)। वत्तक़ू योमल्लातज्ज़ी नफ़्सुन्अ़न्नफ़िसन्शय् अंव्व ला युक्बलो मिन्हा शफ़ा अ़तुंव्व ला यौ ख़ज़ो मिन्हा अ़द्लुं व्व ला हुम्युन्स रून् (२)।

भा० टी० १—हे बनी इस्राईल! मेरी उस कृपा को स्मरण करो जो मैंने तुम पर की। और यह कि विश्व भर के मनुष्यों से मैंने तुम्हें श्रेष्ठता दी—२—और उस दिन से डरो जिसमें कोई किसी को कुछ भी सहायता न दे सकेगा, और न उसकी ओर से सिफ़ारिश स्वीकृत होगी, और न ही उसका कुछ बदला लिया जायगा और न वे सहायता पाएँगे।

व्या०—कहते हैं कि ह० इस्हाक़ के आशीर्वाद का यह फल हुआ कि ह० याक़ूब से लेकर ह० ईसा तक ४००० पैग़म्बर बनी इस्राईल ही में से हुए। इस पर होना तो यह चाहिये था कि वे ख़ुदा की और भी ज़्यादा शुक्र-गुज़ारी करते किन्तु वे मिथ्या अभिमान के शिखर पर चढ़ बैठे। जब ह० मुहम्मद ने उन से कहा कि यदि तुम मेरे ऊपर विश्वास लाओ, तो मैं तुम्हें नजात (मुक्ति)

दिला दूंगा, तो तब उन्होंने बड़े अभिमान से यही उत्तर दिया कि हमारे पास तो पहले ही हज़ारों नजात दिलाने वाले हैं। और वे न केवल हम ही को नजात दिलावेंगे प्रत्युत और भी करोड़ों भूले भटकों की जान बचावेंगे, फिर हमें क्या आवश्यकता है कि आप पर ईमान लावें? कभी ऐसा भी हो सकता है कि हमारे बाप दादा तो जन्नत में जावें और हम उनकी सन्तान हो कर दोज़ख़ में। वास्तव में पैग़म्बरों और उनकी सन्तानों पर दोज़ख़ की आग हराम है। उनके इसी घमण्ड को तोड़ने के लिये ये दो आयतें उतरी थीं। पहली में तो यह बतलाया गया है कि देखो! हमने तुम्हारे कुल के लिये ही पग़म्बरी रिज़र्व करके तुम्हें समस्त संसार से श्रेष्ठता प्रदान की, तुम्हें चाहिये तो यह था कि तुम मेरे और अधिक अनुगृहीत होते। किन्तु तुम तो उलटा अकड़ने लगे, और खुल्लम खुल्ला हमारी नाफ़रमानी करने लगे। भला इस से बढ़ कर और क्या नाफ़रमानी होगी कि जिस पैग़म्बर को मैंने भूमण्डल की नजात के लिये भेजा है तुम उसका सत्कार न करके उस से विमुख हो बैठे। दूत का काम तो केवल यही है कि वह पैग़ाम पहुंचा दे। यदि कोई उस पर आवश्यक ध्यान नहीं देता है तो इससे भेजने वाले ही

का अपमान होता है, दूत का कुछ भी नहीं, अतः तुम मुहम्मद की नाफ़रमानी नहीं करते बल्कि हमारा अपमान करते हो और तुम्हारा यह गुमान कि हम अपने पूर्वजों के कारण दोज़ख़ की भयङ्कर अग्नि से छुटकारा पा जाएंगे यह भी बिल्कुल ही निर्मूल है।

क्योंकि उस दिन तो प्रत्येक को अपनी ही जान की पड़ी होगी, कोई किसी को किसी प्रकार की सहायता न दे सकेगा। दुनिया में तो तुम फ़िद्या (अर्थदंड) देकर अपनी जान बचा लेते हो किन्तु उस दिन इससे भी कुछ काम न चलेगा और निश्चय कुकर्मियों को दोज़ख़ में जाना ही पड़ेगा।

व इज़्नज्जेना कुम्मिन् आले फ़िऔंन यसूमून कुम्सू अलअज़ाबे यो ज़ब्बे हून अब्ना अ कुम्व यस्तह्यू न निसा अ कुम् व फ़ी ज़ालेकु म्बलाउम्मिरब्बेकम्अज़ीम् (३) व इज़्फ़र क़्ना बिकुमु ल्बहरा फ़ अन्जेना कुम् व अग़रक़्ना आल फ़िऔंन व अन्तुम्तु न्ज़ोरून् (४)

भा० टी० ३—जब हम ने तुम्हें फ़िऔंन के लोगों से छुड़ाया जो तुम को महा कष्ट देते थे कि तुम्हारे पुत्रों

का वध करते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और वह तुम्हारे प्रभु की ओर से बहुत बड़ी आपत्ति थी।

४—और जब हम ने तुम्हारे हेतु महासागर को चीर कर तुम्हें सुरक्षित किया और फ़िर्औन के लोगों को डुबो दिया, और तुम अवलोकन कर रहे थे।

व्या०—इन और इन से अगली आयतों में अल्ला मियां बनी इस्राईलपर अपने अहसानात गिनाता है। इन आयतों का फ़िर्औन, और ह० मूसा से बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है अतः पहले हम उनका कुछ वृत्तान्त सुनाने के लिये बाध्य हैं। जो लोग अरब के इतिहास से विज्ञ नहीं हैं प्रायः उन का यह विचार है कि फ़िर्औन किसी विशेष बादशाह का नाम था किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है जैसे शामो रूम के हर एक बादशाह को क़ैसर, और फारिस के हर बादशाह को किस्रा, यमन के बादशाह को तबअ़, हब्श के बादशाह को नज़ाशी, चीनके बादशाह को ख़ाक़ान, हिन्द के बादशाह को बतलीमूस और रूस के बादशाह को ज़ार कहते हैं। इसी प्रकार अमालिका के प्रत्येक शासक को फ़िर्औन कहा जाता था। जिस से हमारी व्याख्या का सम्बन्ध है। इस का असली नाम 'वलेद बिन् माअ़ब था। जब इस के हाथ में मिस्र की बागडोर आ गई तो यह अनुचित अभिमान से उन्मत्त

हो गया। और यह कह कर कि ख़ुदा कोई चीज़ नहीं है मैं ही सब कुछ हूं उस ने प्रजा से अपने को सिजदा कराना चाहा इस को .क़ुतबियों ने तो ख़ुशी २ स्वीकार कर लिया किन्तु बनी इस्राईल ने सिजदा करने से साफ़ २ इन्कार कर दिया। अतएव वह बनी इस्राईल पर बहुत अप्रसन्न रहता और उन में से किसी से मैला उठवाता, किसी से पत्थर तुड़वाता, संक्षिप्ततः यह कि उन्हें कष्ट पहुंचाने के लिये सदैव उद्यत रहता और उन से ऐसे सख़्त और घृणित काम लेता था कि जिन को वास्तव में बनी इस्राईल कर भी न सकते थे। अकस्मात् उसे एक रात्रि में स्वप्न आया कि एक आग शाम (मुल्क का नाम) की ओर से आई और उस ने उस के और अन्य क़ुतबियों के गृहों को यकदम में जला दिया। प्रातःकाल उस ने नजूमियों से इस स्वप्न की ताबीर पूछी। उन्हों ने बतलाया कि आज रात्रि समय बनी इस्राईल में एक ऐसा गर्भ रहेगा जो पैदा हो कर तेरी जान का घातक होगा। यह सुन कर तो उस के पांवों के नीचे की मिट्टी निकल गई और उस ने आर्डर दे दिया कि बनी इस्राईल में से इस रात्रि के लिये मर्द २ तो अमुक मैदान में एकत्र हो जावें और उन की स्त्रियां गृहों में रहती हुई शहर से बाहर न जा सकें, निदान ऐसा ही

हुआ किन्तु इमरान नामी जो उस का बाड़ी गार्ड था वह बनी इस्राईल में से ही था। उस के पृथक करने का किसी को ख्याल तक भी न हुआ और उस ने शहर में रह कर ही अपनी स्त्री से सभोग किया जिस से ह० मूसा ने गर्भ में प्रवेश किया। दूसरे दिन जब नजूमियों ने आकाश पर सितारा चमका हुआ देखा † तो फ़िर्औन से कह दिया कि तू प्रबन्ध ठीक नहीं कर सका तेरा मूलोच्छेदक गर्भ में प्रवेश कर चुका है। इस पर उस ने आर्डर दे दिया कि आज से बनी इस्राईल में जो लड़का भी उत्पन्न हो उस को फ़िलफ़ौर जान से मार डाला जाय। हुकम की देरी थी कि हज़ारों बे गुनाह बच्चों के ख़ून से हाथ रंगे जाने लगे। किन्तु जब हज़रत मूसा उत्पन्न हुए तो ख़ुदा की क़ुदरत से सब पहरे वाले अन्धे हो गये और उन की माता को इतना अवकाश मिल गया कि वह अपने प्रिय पुत्र को सन्दूक में रख पास बहने वाली नील नदी में इस आशा से बहा सकें कि स्यात् यह बहता हुआ कहीं दूर जा निकले और कोई ख़ुदा का बन्दा इसका पा-

† इबक्ने अब्बास से रवायत है कि जब पैग़म्बर बाप की पुश्त से जुदा होता है तो सितारा उस का उसी शब आसमान पर ज़ाहिर होता है।

त० अ० पृ० ६५३

लन पोषण कर ले। मगर होता वही है जो मन्जूरे खुदा होता है। उस दरिया में से एक छोटी नहर काट कर फ़िरऔन के गृह में लाई गई थी। आप उसी में से बहते हुए उस के घर में पहुंच गये। चूंकि फ़िरऔन के सिवाय एक लड़की के और वह भी कुष्टी थी और कोई सन्तान न थी इसलिये उस की बीवी आस्या यह देख कर कि एक ख़ूबसूरत लड़का हमारे महल में बह कर आगया है बहुत ही प्रसन्न हुई और उन्होंने धाय बुला कर उस के दुग्ध पानादि का समुचित प्रबन्ध कर दिया। किन्तु ह० मूसा ने किसी धाय का दूध न पी कर जब उनकी मां ही धाय बन कर पहुंची तब उन्हीं का दूध पिया और खुदा की अपार महिमा के कारण आप अपने शत्रु के गृह में रहते हुए भी अपनी असली माता की गोद में पलने लगे। और फ़िरऔन के फ़रिश्तों को भी ख़बर न हो सकी कि उस का काल उस के गृह में ही आ घुसा है किन्तु भावी बलवान होती है। कुछ समय व्यतीत होने पर न जाने किस प्रकार आपका कुछ थूक उस कुष्टी लड़की के लग गया, बस थूक का लगना ही था कि वह बिल्कुल भलीचंगी होगई। जब लड़की की आरोग्यता का समाचार बादशाह ने सुना तो वह बहुतही विस्मित हुआ क्योंकि वैद्य

लोग उस के रोग को असाध्य बतला चुके थे। तब तो उस को आंहजरत के देखने की उत्कण्ठा हुई। अन्ततः आप को बादशाह के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। उसने आपको बड़े प्रेम से गोद में लेकर चूमना शुरू करदिया किन्तु आपने उस के मुंह की ओर देख कर उस की दाढ़ी के कुछ बाल नोच लिये। तब तो फ़िरऔन को बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ और उस ने इन को बनी इस्राईल की सन्तान समझ कर गला घोंट देने का हुक्म दे दिया किन्तु कुछ लोगों के समझाने और उस के दिल में ख़ुदा की ओर से मोहब्बत पड़ने पर परीक्षा की समाप्ति तक उस ने मौत का हुक्म वापस ले लिया। परीक्षा यह थी कि आं हज़रत के सम्मुख दो थालियों में लाल और आग के सुर्ख़ अंगारे रक्खे जावें क्योंकि अगर यह कोई साधारण बच्चा होगा तो यह चमकता हुआ आग का अंगारा उठावेगा। जब दोनों थालियां सामने आई तो आप चाहते थे कि हाथ बढ़ा कर लाल उठा लेवें किन्तु जिब्राईल ने आप का हाथ अङ्गारों पर रख दिया जिस से आप का हाथ जल उठा फिर आप ने एक अङ्गारा मुँह में दे लिया तो मुँह भी जल उठा जिस की वजह से आप तोतले बोलने लगे और आख़िर तक बोलते रहे। इस पर बादशाह और उस के सा-

थियों को बिलकुल निश्चय हो गया कि यह तो कोई मूर्ख लड़का है, पैग़म्बर नहीं । क्योंकि पैग़म्बर तो स्वभावतः ही होशयार और चालाक होते हैं । फिर यह अपना मुँह और हाथ क्यों जला बैठता । तत्पश्चात् आप पर किसी प्रकारका सन्देह न रहा और आप स्वतन्त्रता पूर्वक राज घराने में रहने लगे और आप को सब लोग फ़िरऔन का पुत्र कह कर ही पुकारने लगे । जब आप की आयु लग भग बीस वर्ष के हो गई तो आप ने इस्राईल के सुधार पर कमर बान्ध ली और आप छिप छिप कर उन्हें समझाने बुझाने लगे आप को पर्यटन का बहुत शौक़ था एक दिन जब आप जंगल की ओर जा रहे थे तो क्या देखते हैं कि एक कुतबी किसी बनी इस्राईल के सिर पर लकड़ियों का भारी गट्ठा रखाये चला आ रहा है । बोझ से तंग आकर बिचारे बनी इस्राईल ने गट्ठा पृथ्वी पर पटक दिया, इस पर कुतबी का मारे क्रोध के मुख लाल हो गया और उसने उसको मारना चाहा किन्तु बनी इस्राईलने ह० मूसा को आता देख कर उन की दुहाई मचाई ।

आं हज़रत झपट कर उसके पास पहुंचे और कुतबी के ज़ोर से एक ऐसा घूंसा मारा कि उसने वहीं तड़प तड़प कर जान देदी । जब इस दुर्घटना का फ़िरऔन को पता

चला तो उसने फ़ौरन आं हज़रत की हाज़िरी का हुक्म दिया। इस पर आपने अपने इष्ट मित्रों से परामर्श किया कि अब क्या करना चाहिये ? तब सबने आपको यही सम्मति दी कि तुम इस समय कहीं को रफ़ू चक्कर हो जाओ अन्यथा जान का भय है। आपने इस शुभ-सम्मति को स्वीकार कर जङ्गल की ओर प्रस्थान किया। जब आप कुछ दूर निकल गये तो एक जगह क्या देखते हैं कि दो लड़कियां कुछ बकरियों को घेरे एक कूप के निकट खड़ी हैं। जब आपने उनका वृत्तान्त पूछा तो उन्होंने कहा कि हम शोएब, पैग़म्बर की लड़कियां हैं† हमारा पिता चक्षु विहीन और दुर्बल है अतः हमें ही बकरियां चरानी पड़ती हैं। आज हम और गवालों के साथ यहां बकरियां चराने आए थे तो उन्होंने अपने चौपाओं को पानी पिला कर फिर कुए पर पत्थर रख दिया कि जिससे हम अपनी बकरियों को पानी न पिला सकें। यह सुन कर आं हज़रत को बड़ा रहम आया और आपने कुए से ४० डोल पानी खींच कर उनकी सब बक-

† हदीसे मिश्कात् भाग ८ पृष्ठ १५६ पर लिखा है कि 'ह० आदम से लेकर ह० मुहम्मद तक १२४००० पैग़म्बर और नबी दुनिया में आये हैं, चूंकि ह० आदम की पैदाइश को क़रीब ७००० वर्ष हुए हैं इससे जान पड़ता है कि एक ही समय में भी कई २ पैग़म्बर और नबी दुनिया में आते रहे हैं।

रियों की प्यास बुझा दी। जब वे लड़कियां अपने घर पहुंचीं तो उन्होंने ह० मूसा की सहायता का सब हाल कह सुनाया। इस पर ह० शोएब ने कहा कि तुम उसे ढूंढ कर मेरे पास ले आओ। वे लड़कियां फिर उस कुए की ओर आईं और आपको अपने घर ले गईं। ह० शोएब ने उनकी रामकहानी सुन कर कहा तुम यहां पर ही रहो। जब ८ साल मिहर की बकरियां चरा चुकोगे तब तुम्हारा निकाह भी इन लड़कियोंमें से एक के साथ कर दिया जायगा। कहते हैं कि आपने अपने सुसर साहिब को खुश करने के लिये बजाय ८ सालके पूरे १० वर्ष बकरियां चराईं तब ह० शोएब ने अपनी लड़की सफूरा के साथ आप का निकाह कर दिया और एक असा * (लाठी) और बहुत सी भेड़ बकरियां देकर आप को विदा किया। जब आप मञ्ज़िल २ कर के कोहे तूर के पास पहुंचे तो अचानक आंधी, घटा, और मेह का तूफ़ान आगया जिस के कारण से शीत अधिक पड़ने लगा। आप को सर्दी दूर करने के लिए आग की आवश्यकता हुई तो आपने उसकी खोज में चारों ओर घूमना

* कहते हैं कि जब ह० आदम जन्नत से निकाले गये थे तो वे वहां से एक मिस्वाक(दतौन)तोड़ लाये थे । वही मिस्वाक ह० मूसा का यह असाथी जो पुश्त दर पुश्त एक पैग़म्बर दूसरे को देता चला आया था। क०अ०पृ.१६

आरम्भ कर दिया। थोड़ी देरमें आप क्या देखते हैं कि पहाड़ के ऊपर बड़ी तेज अग्नि चमक रही है। यह कुछ घास फूंस ले कर उसे सुलगाने के लिए दौड़े और जहां वह अग्नि दीखती थी उस पर फूंस रखना चाहा किन्तु वह वृक्ष पर चढ़ गई। आपने भी ऊपर चढ़ना चाहा परन्तु वह और वृक्ष पर चली गई। यह आश्चर्य-जनक घटना देख कर आपके मन में नाना प्रकारके संकल्प विकल्प उठने लगे। इतनेमें किसीने चिल्ला कर पुकारा। ऐ मूसा! इन्होंने कहा लब्बेक(हां)मगर इन्हें और कोई भी नज़र न आया तब तो ये और भी भय भीत हुए और कहने लगे कि कौन है जो आवाज़ देता है और अपने को ज़ाहिर नहीं करता। इस के उत्तर में इन्हें सुनाई दिया 'इन्नी अनल्लाहो रब्बुलआलीमू व अनारब्बक या मूसा + फ़रूलअ नअलेक़ इन्नकबिल्वादी मुक़द्दसे तूवनू' यह सुनते ही आं हज़रत ने अपने जूते उतार फेंके और एकदम सिजदे में गिर पड़े फिर खुदा नेकहा कि आज से मैं ने तुम्हें पैग़म्बरी अता की, तुम यहां से सीधे मिस्र जाओ और फ़िरऔन के

+ हे मूसा निश्चय मैं अल्ला हूं, तेरा और सारे जहां का मालिक हूं। तू अब अपने जूते उतार दे क्योंकि तू इस समय पवित्र पृथ्वी पर तू आ खड़ा है। क़ु० सू० २० रु० १ आ० १८

आस्तिक बनाने की कोशिश करो नहीं तो इस्राईल को वहां से निकाल लाओ । खुदा की आज्ञानुसार आं हज़रत ने फ़िरऔन से जाकर कहा कि मैं पैग़म्बर हूं तुम मुझ पर ईमान लाओ । उसने कहा क्या तू वही मूसा नहीं है जो मेरा बेटा करके लोगोंमें मशहूर था और तू अपनी जान के ख़ौफ़ से भाग गया था । आज तू पैग़म्बर बन बैठा । कहते हैं कि इस पर आं हज़रत ने अपना असा ज़मीन पर पटक दिया तो वह अज़दहा (अजगर) बन गया † । उसके ७०० दांत और ७२ पांव हाथियों जैसे थे और उसके सारे बदन पर बरछियों जैसे बाल खड़े थे । वह एक दम फ़िरऔन पर झपटा तब उसने प्रार्थना की कि मुझे अब बचालो मैं ज़रूर ईमान लेआऊंगा । आं हज़रत ने उसे हाथ में उठा लिया तो वह पहले जैसा ही असा बन गया । इस के अतिरिक्त आं हज़रत ने और भी बहुत से * मोअजिज़े दिखलाए किन्तु वह धूर्त्त फिर भी ईमान न लाया । तब तो आं हज़रत ने उचित समझा कि बनी इस्राईल को यहां से निकाल ले चलें । बस एक रात में सब बनी इस्राइलों को लेकर ह० मूसा ने

---

† क़ु० सू० १६ रु० १

* यहां हम उन सब को विस्तार भय से नहीं लिखते ये आगे भाष्य में आ जावेंगे ।

कूंच बोल दिया। जब वे कुछ दूर निकल गये तो फ़िऔन को उन के चोरी से भाग जाने का हाल मालूम हुआ और उसने कई लाख सवार पियादे ले कर दरियाए कुल्ज़ुम के इसी पार उन्हें जा घेरा किन्तु आं हज़रत ने अपना असा दरिया में मारा तो शीघ्र ही पानी टुकड़े २ हो कर एक ओर को होगये और बनी इस्राईल दम की दम में दरिया में से होते हुए दूसरी ओर पहुंच गये। यह देख कर तो फ़िऔन बड़ा घबराया, और उसने चाहा कि वह भी दरिया को पार कर जाय किन्तु वह उसे देखते ही तुग्यानी पर हो गया जिससे उस में घुसने का उसे साहस न हुआ किन्तु खुदा को तो उसका डुबोना ही मंजूर था, अतः खुदा के हुक्म से जिब्राईल एक घोड़ी पर सवार होकर फ़िऔन के घोड़े के सामने आ खड़ा हुए, घोड़ा घोड़ी, को देखते ही भड़क उठा, और वह फ़िऔन के क़ाबू से बाहर हो गया। यह देख कर ह० जिब्राईल ने अपनी घोड़ी को दरिया में छोड़ दिया और उस के पीछे फ़िऔन का घोड़ा और उन के पीछे तमाम शाही लशकर भी दरिया में कूद पड़ा। ह० जिब्राईल तो अपनी घोड़ी कुदाते हुए बच निकले किन्तु फ़िऔन और उसके सब साथी वहीं दरिया में ही गड़गप हो गये । यही बातें इन आयतों में बतला

कर बनी इस्राईल को फटकारा जाता है कि तुम्हारे साथ हमने ऐसे २ अहसानात किये किन्तु तुम लोग ऐसे निर्लज्ज हो कि हमारे पैग़म्बर मुहम्मद पर विश्वास नहीं लाते। बस! अपनी ख़ैर चाहते हो तो चुप चाप कान दबा कर ईमान ले आओ नहीं तो दोज़ख़ की आग के लिये तैयार हो जाओ !!!



मोम का तेल।

यह तेल सब प्रकारकी वातव्याधि, कमरकी पीड़ा लक़वा पीठ, जंघा, घुटना, जोड़, हाथ, कंधा इत्यादिकी सब बीमारियों को दूर करता है। कैसीही पीड़ाहो या किसी अंगमें हो या पक्षाघात अपबाहुक, हाथ पांवका जकड़ना, सब देखते २ बंद होजाता है, यह तेल वातके सब रोगोंपर सिंह समान पराक्रम दिखलाता है। दर्द के मारे रोता हुआ आदमी तेल लगातेही हँसने लगता है।

मूल्य एक औंस की शीशी का ॥)

* कर्पूरारिष्ट *

कर्पूरारिष्ट के गुणसे कोई मनुष्य अपरिचित नहीं है इसका प्रभाव बड़ी २ बीमारियों में प्रत्यक्ष दीख पड़ता है विशेष कर विशूचिका महामारी अजीर्ण अधिक प्यास देहकी जलन खून गिरना वगैरह चार छः बूंद में ही आराम होते हैं। गरमीके दिनोंमें इसका अवश्य सेवन करना चाहिये इस के पीतेही दस्त बंद होकर जलन, ऐंठन, प्यास, सब शांत हो जाते हैं। मू० आधा औंसकी शी० का ॥)



नोट—सब दवाओं का डाकव्यय पृथक देना होगा।